ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात

जिन घरों में भूत, प्रेत का प्रकोप रहता है, वहाँ गायत्री की पूजा होने लगे, तो किसी प्रेत पिशाच का ठहरना वहाँ नहीं हो सकता। किसी तांत्रिक, ओझा आदि ने अपने ऊपर या बालकों पर कोई कुप्रयोग किया हो, तो उसका अनिष्ट भी गायत्री माता की कृपा से शांत हो जाता है।

भूत पिशाच सबै भय खावे।

यम के दूत निकट नहीं आवे।।

मथुरा में वर्ष 1958 में आयोजित 1008 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में लाखों साधकों ने भाग लिया था। उक्त यज्ञ की भोजनशाला के भंडार गृह में जिन सज्जन की ड्यूटी लगीं थीं, उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ कि

कुल बीस बोरी आटा उनके सामने गिनकर रखा था नित्य चार लाख से अधिक लोगों ने भोजन किया। प्रतिदिन अठारह बोरी निकाला जाता था, फिर भी स्टाक यथावत बना हुआ था। परम पूज्य

गुरुदेव से पूछने गये तो बताया कि भंडार में दो बोरे हमेशा बनें रहें, शेष व्यवस्था यथावत होती रहेगी। नियमित रूप से सबेरे शाम भोजन चलता रहा, पर उनकी समझ में कुछ नहीं आया। यह तो पूज्यवर की लीला की चमत्कारी झांकी भर थी जिसे देखने का सौभाग्य प्रारब्ध वश मिल गया था। अंत में कार्यक्रम समाप्त होने के बाद भी बीस बोरा आटा यथावत रखा था। लगभग यही घटनाक्रम सभी ने पिछले दिनों आयोजित श्रद्धांजलि समारोह

गायत्री से बढ़कर आत्मा को पवित्र करने वाला अन्य कोई मंत्र नहीं है। जो मनुष्य नियमित रूप से तीन वर्ष तक गायत्री जप करता है वह ईश्वर को प्रा प्त करता है। जो द्विज दोनों संध्याओं में गायत्री मंत्र को जपता है वह वेद पढ़ने के फल को प्राप्त करता है। अन्य कोई साधना करें या न करें, गायत्री मंत्र के जप से ही सिद्धी को पा सकता है। नित्य एक हजार जप करने वाला पापों से वैसे ही छूट जाता है, जैसे केंचुली से सर्प छूट जाता है।

गायत्री मंत्र का निरंतर जप करने वाले साधकों को मां की कृपा से निम्नलिखित लाभ मिलते हैं- (1) सद्ज्ञान (2) भव बंधन से मुक्ति (3) भाग्योदय (4) चिरस्थायी आरोग्य (5) संकट निवारण (6) अर्थ संतुलन (7) सुखी गृहस्थ (8) सुसंतति (9) भव सागर से तरना (10) दिव्य दृष्टि (11) सर्वतोमुखी उत्कर्ष (12) स्वर्ग लोक में आधिपत्य

पराशक्ति व ब्रह्मरुपा गायत्री की उपासना से

ब्रह्मा, विष्णु, शिव, राम, कृष्ण, दुर्गा, काली, लक्ष्मी, सरस्वती आदि भगवान के विभिन्न रूपों की उपासना भी खुद ही हो जाती है क्योंकि ब्रह्म ही गायत्री है

गायत्री मंत्र के जप से सिद्धि का आधार तप, त्याग और संयम है। जो साधक जितना संयमित जीवन जीते हैं उसी अनुपात में मंत्र शक्ति का प्रचंड बल प्राप्त होता है।

जय वेद माता गायत्री

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं

गायत्री मंत्र भारतीय धर्म दर्शन की आत्मा है।उसे परम् प्रेरक गुरुमंत्र कहा गया है। गायत्री मंत्र में सद्ज्ञान की ब्रह्म चेतना और सत्प्रयोजन पूरा कर सकने की प्रचंड शक्ति भरी पड़ी है, इसलिए उसे ब्रह्मवर्चस भी कहते हैं।

गायत्री मंत्र इतना शक्तिशाली और सामर्थ्यवान है कि साधकों की जन्मकुंडली के जितने भी अमंगल करने वाले दोष है उन सबको अपनी प्रचंड उर्जा से जलाकर भस्म कर देता है।

गायत्री साधना से सतोगुण में वृद्धि होती है और आत्मा पर पड़े हुए विकारों का आवरण हट जाता है जिससे आत्मा महान बनती है। चुकी आत्मा में अनेकों ज्ञान, अज्ञान साधारण, असाधारण, अद्भुत, आश्चर्यजनक शक्तियों के भंडार छिपे पड़े हैं वे खुल जाते हैं और साधक सिद्ध योगी के रूप में दिखाई पड़ता है। आत्मा का यह निर्मल रुप सभी ऋद्धि -सिद्धियों से परिपूर्ण होता है।

गायत्री माता संसार के समस्त ज्ञान विज्ञान की आदि जननी है। वेदों को समस्त प्रकार की विद्याओं का भण्डार माना जाता है, वे वेद गायत्री की व्याख्या मात्र है। गायत्री को वेदमाता कहा गया है। ब्रह्मा जी ने अपने मुख से चारों वेदों को प्रकट किया।
ॐ भूर्भुवः स्वः से ऋग्वेद, तत्सवितुर्वरेण्यं से यजुर्वेद, भर्गो देवस्य धीमहि से सामवेद और धियो योन प्रचोदयात् से अथर्ववेद की रचना हुई है।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं

गायत्री मंत्र में परमात्मा से प्रार्थना की गई है कि वह हमें सद्बुद्धि दे। हमारे मस्तिष्क को कुविचारों, कुसंस्कार,नीच वासनाओं से,दुर्भावनाओ से छुड़ाकर सतोगुणी ऋतम्भरा प्रज्ञा बुद्धि से, विवेक से, सद्ज्ञान से पूर्ण करें।

आत्मबल की शक्ति भौतिक बल की तुलना में असंख्य गुना बड़ी है।जिस संकट का निवारण सामान्य उपाय से संभव नहीं दिखता हो तब आद्यशक्ति का सहारा लिया जाता है।इस शक्ति का प्रयोग असफल नहीं होता है। आत्मबल बढ़ाने के लिए गायत्री मंत्र की साधना सर्वोपरि है।

गायत्री की एक धारा दुर्गा है। दुर्गा को ही काली कहते हैं। काली को महाकाल की सहधर्मिणी माना गया है। दुर्गा का वाहन सिंह है वह पराक्रम का प्रतीक है। जीवन संग्राम में विजय प्राप्त करने के लिए हर किसी को आंतरिक दुर्बलताओं से जुझना पड़ता है। गायत्री मंत्र के जप से पराक्रम शक्ति में वृद्धि होती है।

मनुष्य जीवन में दु:खों का कारण अज्ञान, अशक्ति और अभाव ही है। तीनों ही सद्बुद्धि के अभाव में पनपते हैं। गायत्री मंत्र के जप से सद्बुद्धि का जागरण होते ही तीनों समस्याओं का निदान हो जाता है।

गायत्री मंत्र की प्रचंड शक्ति के तप से जन्म -जन्मान्तरों के पाप जलकर भस्म हो जाते हैं। प्राचीन काल में पुरुषों की अपेक्षा महिलाएं ज्यादा तपस्विनी हुआ करती थी। उनकी प्रचंड तप की शक्ति से भगवान भी उनके गर्भ से पैदा हुए हैं।

जैसे जैसे साधक की गायत्री साधना सफल होने लगती है, वैसे-वैसे उसकी आत्मनिरीक्षण करने की प्रवृत्ति बढ़ने लगती है। उसके अंदर जो त्रुटियां हैं उन्हें ढूंढ ढूंढ कर बाहर निकालना शुरू कर देता है। उसका चित्त हर घड़ी प्रसन्न रहने लगता है।

मनुष्य के पिछले जन्मों के कर्मों के कारण जो भला-बुरा प्रारब्ध बन जाता है, वह भूगतना ही पड़ता है। इससे कोई नहीं बच सकता है। वर्तमान पूण्य, तप या शुभ कामों कर्मों का प्रतिफल तो आगे चलकर उसका परिपाक होने पर ही मिलेगा। इतना होने पर भी गायत्री माता की कृपा से कठिन प्रारब्धों में संशोधन हो जाता है। श्रद्धा और विश्वास के साथ गायत्री माता का आंचल पकड़ने वाले को माता कष्टों से बचातीं है।

संसार का सबसे बड़ा बल - आत्मबल गायत्री साधकों को प्राप्त होता है। गायत्री उपासना से सतोगुण की वृद्धि होती है। यह परिवर्तन आपत्तियों के निवारण का, सुख शांति की स्थापना का राजमार्ग बन जाता है।

नास्ति गंगा समं तीर्थं न देवा: केशवात्पर: ।

गायत्र्यस्तु परं जप्यं न भूतं न भविष्यति ।।

गंगा जी के समान कोई तीर्थ नहीं है , केशव से श्रेष्ठ कोई देवता नहीं है , गायत्री मंत्र के जप से श्रेष्ठ कोई जप न आज तक हुआ है न होगा ।

गायत्री से बढ़कर आत्मा को पवित्र करने वाला अन्य कोई मंत्र नहीं है। जो मनुष्य नियमित रूप से तीन वर्ष तक गायत्री जप करता है वह ईश्वर को प्राप्त करता है। जो द्विज दोनों संध्याओं में गायत्री मंत्र को जपता है वह वेद पढ़ने के फल को प्राप्त करता है। अन्य कोई साधना करें या न करें, गायत्री मंत्र के जप से ही सिद्धी को पा सकता है। नित्य एक हजार जप करने वाला पापों से वैसे ही छूट जाता है, जैसे केंचुली से सर्प छूट जाता है।

गायत्री मंत्र की शिक्षा है कि अपनी आत्मा को सबमें और सबकी आत्मा को अपने में समाई हुई देखो। अपना वहीं लाभ स्वीकारों जो समाज के लाभ का एक भाग है।

आत्मा शक्तियों का भंडार है। उसमें वे सब तत्त्व मौजूद हैं जिनकी सहायता से मनुष्य मनचाही वस्तुएं प्राप्त कर सकें। जिसकी बुद्धि शुद्ध हो जाती है उसके लिए संसार के सभी ऐश्वर्य सुलभ हो जाते हैं। नियमित रूप से गायत्री महामंत्र का जप करते रहने से बुद्धि शुद्ध होती है।

गायत्री बड़ी चमत्कारी साधना है। इसके द्वारा मनुष्य को लौकिक और पारलौकिक लाभ तो प्राप्त होते ही हैं और अनेक मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं; पर अनेक समय इसके प्रभाव से मनुष्य की इस प्रकार रक्षा होती है कि उसे देवी चमत्कार के अलावा कुछ नहीं कहा जा सकता है।

ॐ भूर्भुवः स्वः

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य

धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात

हर दिन गायत्री मंत्र जप करने से आपके शरीर के रोग, और अंदर मन के संताप, पीडा, दुख, चिंता आदि दूर होते हैं।

गायत्री मंत्र के रोज़ाना जाप से व्यक्ति का मनोबल बढ़ता है और वह बुरे परिस्थितियों के आगे घुटने नहीं टेकता।

- विचार क्रांति अभियान

गायत्री उपासना करने वालों की बुद्धि शुद्ध होती है। जिस घर में गायत्री की पूजा, उपासना, यज्ञ, जप, तप आदि का प्रयोजन होता रहता है। वहाँ सद्बुद्धि का स्वाभाविक प्रकाश उत्पन्न होता है और उस परिवार में विघटनकारी तत्व एवं दुर्गुण अपने आप कम होते हैं। ऐसे धार्मिक परिवारों में सदा सब प्रकार की शांति विराजती देखी जाती है।

गायत्री साधना एक वैज्ञानिक पद्धति है । इसके द्वारा ईश्वर की ह्रीं , श्रीं , क्लीं - ज्ञान , वैभव और बल की सम्मिलित शक्ति को पकड़ कर , खींच कर अपने में धारण कर सकते हैं और उसके आधार पर जीवन में अनेक मानसिक एवं सांसारिक आनन्दों का उपभोग कर सकते हैं।

गायत्री- उपासना का दार्शनिक स्वरूप दूरदर्शी विवेकशीलता है, जो संकीर्ण स्वार्थपरता द्वारा समर्थित तात्कालिक लाभों से ऊँचा उठाती है और वहाँ ले पहुँचती है, जहाँ ठिकाने पर अपना ही नहीं, समस्त सृष्टि का हित साधन हो सकता है।

जैसे विद्यार्थी का मूल्यांकन परीक्षा में होता है। पहलवान का मूल्यांकन अखाड़े में होता है। उसी तरह गायत्री साधक का मूल्यांकन विपरीत परिस्थितियों में होता है, उत्तीर्ण होने के बाद ही साधना की अगली कक्षा में प्रवेश मिलता है।

गायत्री कामधेनु है, जो उसकी पूजा, उपासना, आराधना और अभिभावना करता है, वह प्रतिक्षण माता का अमृतोपम दुग्धपान करने का आनंद लेता है और समस्त अज्ञानों, अशक्तियों और अभावों के कारण उत्पन्न होने वाले कष्टों से छुटकारा पाकर मनोवांछित फल प्राप्त करता है। - गायत्री महाविज्ञान

ॐ भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं। भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात॥

"जैसे श्वास के बिना जीवन नहीं, वैसे ही प्राण शक्ति के बिना कोई भी कार्य पूर्ण नहीं। गायत्री इसे जगाती है।"

वेद कहते हैं: गायत्री विहीन व्यक्ति से बड़ा मूर्ख संसार में कोई और नहीं है. जिसने गायत्री को धारण नहीं किया वह कुछ भी पाने योगग नहीं है। बिना गायत्री मंत्र के जप का किसी भी देवी-देवता की आराधना बेकार चली जाती है.

"भावना रहित जप केवल ध्वनि है, भावना युक्त जप आत्मा का संगीत है।"

गायत्री मंत्र का उच्चारण स्पष्ट, धीमा और श्रद्धा से करें।

हर शब्द को अनुभव करें — जैसे ब्रह्मांड की ऊर्जा आपके भीतर उतर रही हो।

संसार में इच्छाएँ अनंत होती हैं, परंतु अंततः केवल परमात्मा की प्राप्ति की इच्छा शेष रहती है। जब यह इच्छा भी पूर्ण हो जाती है, तो कोई अप्राप्य वस्तु नहीं बचती।

परिणामस्वरूप, इच्छाएँ समूल नष्ट हो जाती हैं, और इच्छा के मिटते ही अज्ञान का भ्रम पूर्णतः समाप्त हो जाता है। यही मोक्ष की अवस्था है।

अमरवाणी 🌷 🌷 गायत्री माता और यज्ञ की पूजा करने का काम हम महिलाओं को ही सौंप देते हैं। यहाँ हमारी गायत्री माता की स्थापना है, यहाँ की पूजा कन्याएँ करती हैं। हमारा ऊपर वाला मंदिर, जहाँ अखण्ड दीपक है, उसकी पूजा भी कन्याएँ करती हैं। वहाँ वाला जो मंदिर है, उसकी भी पूजा कन्याएँ करेंगी। कन्या और ब्राह्मण की तुलना मैं समान रूप से करता हूँ। आज के समय में, आज के जमाने में यदि सच्ची पूछे तो ब्राह्मण से ज्यादा मैं कन्याओं को महत्त्व देता हूँ। आज के जमाने में महिलाएँ क्या कर सकती हैं? महिलाएँ यज्ञ की परंपरा और गायत्री मंत्र का जप जारी रख सकती हैं। उनको समय भी नहीं मिलता तो भी यदि वे चाहें तो बच्चों को दूध पिलाते समय में जप करती रह सकती हैं। इससे दूध के साथ- साथ में बच्चों में श्रेष्ठ संस्कार बनेंगे। खाना पकाने के साथ- साथ में यदि महिलाएँ जप करती रहेंगी, तो उस घर का खाना खाने वाला आदमी जो भी होगा, उसमें सद्बुद्धि आएगी, श्रेष्ठ विचारणा आएगी। मैं चाहता हूँ कि यह आंदोलन अब फैलना चाहिए।

गायत्री की शब्द शक्ति

गायत्री का विज्ञान और भी अधिक महत्वपूर्ण है उसके शब्दों का गुँथन स्वर शास्त्र के अनुसार सूक्ष्म विज्ञान के रहस्यमय तथ्यों के आधार पर हुआ है। इसका जप ऐसे शब्द कंपन उत्पन्न करता है जो उपासक की सत्ता में उपयोगी हलचलें उत्पन्न करे-प्रसुप्त दिव्य शक्तियों को जगाये और सत्प्रवृत्तियाँ अपनाने की उमंग उत्पन्न करे। गायत्री जप के कम्पन साधक के शरीर से निसृत जाकर समस्त

वातावरण में ऐसी हलचलें उत्पन्न करते हैं जिनके आधार पर संसार में सुख-शांति की परिस्थितियां उत्पन्न हो सकें।

श्रीकृष्ण कहते हैं - जो व्यक्ति न तो कर्म फलों से घृणा करता है और न ही कर्म फल की इच्छा करता है, वह व्यक्ति नित्य सन्यासी के रूप में जाना जाता है। हे महाबाहो अर्जुन! मनुष्य सभी द्वन्द्वो से रहित होकर भवबंधन को पार कर पूर्ण रूप से मुक्त हो जाता है।

भगवान मनु कहते हैं:

गायत्री से बढ़कर पवित्र करने वाला और कोई मंत्र नहीं है। जो मनुष्य नियमित रूप से तीन वर्ष तक गायत्री का जाप करता है वह ईश्वर को प्राप्त करता है। अन्य कोई साधना करे या न करे केवल गायत्री-जप से ही सिद्धि पा सकता है। नित्य एक हजार जप करने वाला पापों से वैसे ही छूट जाता है जोने केचुली से सर्प छूट जाता है। जो द्विज गायत्री की उपासना नहीं करता वह निन्दा का पात्र है।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

जब हम श्रद्धा और एकाग्रता से गायत्री का जप करते हैं, तो ये कंपन सीधे हमारे प्राण-कोशों को सक्रिय करते हैं। यह एक चाबी की तरह काम करता है, जो हमारे भीतर की सुप्त प्राण शक्ति के दरवाज़ों को खोल देती है।

जिसके हृदय में समस्त प्राणियों के प्रति सदभावना भरी हुई है यथार्थ में वही दिव्य ज्ञान का अधिकारी है । मनुष्यों में देवता वह पुरुष है जो पवित्र है , नि:स्वार्थ है , प्रेमी है । अपने तुच्छ शारीरिक स्वार्थों का परित्याग करने के उपरांत जो संतोष प्राप्त होता है , वह संसार को अपने अधीन कर लेने के सुख से भी हजारों गुना अधिक है । विचार क्रांति अभियान - अखण्ड ज्योति अप्रैल १९४१ पृष्ठ १२ awgp sot

समाधि योग की चरम अवस्था है — जहाँ चित्त पूर्णतः शांत होता है । स्वामी विवेकानंद

"जब चित्त की सारी वृत्तियाँ शांत हो जाती हैं, तब आत्मा स्वयं को प्रकट करती है। यही समाधि है।" यह वह अवस्था है जहाँ साधक विषयों से मुक्त होकर ब्रह्म के साथ एकत्व का अनुभव करता है।

जगत के दुर्बुद्धिग्रस्त जन-मानस का संशोधन करने के लिए सद्-बुद्धि की देवी गायत्री महामंत्र की शक्ति एवं सामर्थ्य अद्भुत भी है और अद्वितीय भी। गायत्री महाविज्ञान - युगऋषि श्रीराम शर्मा आचार्य

ॐ भूर्भुवः स्वः।तत्सवितुर्वरेण्यं।भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात॥

गायत्री और उसकी प्राण प्रक्रिया "गायत्री मंत्र शरीर में ऊर्जा का संचार करता है, और प्राणायाम उस ऊर्जा को हर कोशिका तक पहुँचाने का मार्ग प्रशस्त करता है।"

अमेरिकी वैज्ञानिक ने कहा दुनिया का सबसे प्रभावशाली मंत्र है गायत्री मंत्र

अमेरिकी वैज्ञानिक डॉ. होवर्ड स्टीएनगेरिल ने दुनियाभर के मंत्र, भजन और मंगलाचरणों का अपनी शरीर विज्ञान की प्रयोगशाला में गहन परीक्षण करने के बाद गायत्री मंत्र को विश्व की सबसे प्रभावशाली प्रार्थना घोषित किया है। उन्होंने पाया कि गायत्री मंत्र प्रति सेकेण्ड 1,10,000 ध्वनि तरंगें उत्पन्न करता है, जो सभी भजनों में सबसे ज्यादा हैं। उन्होंने पाया कि गायत्री मंत्र में विभिन्न आवृत्तियों (फ्रीक्वेंसी) के मिश्रण से विशेष आध्यात्मिक शक्तियों को विकसित करने की क्षमता विद्यमान है। • हम्बर्ग विश्वविद्यालय ने गायत्री मंत्र के शरीर और मन पर पड़ने वाले प्रभावों पर शोधकार्य आरम्भ कर दिये हैं।

यों तो गायत्री मंत्र मानव मात्र के लिए उपास्य एवं कल्याण कारक है, उसकी शरण में जाने पर सभी का कल्याण होता है, पर जो लोग ब्रह्म परायण हैं, जिन्होंने अपनी सात्विक प्रवृत्तियों को जागृत करके ब्राह्मणत्व प्राप्त किया है, उनके लिए गायत्री परम कल्याण कारिणी है।
गायत्री मंत्र को गुरुमंत्र और बीजमंत्र कहा गया है। जैसे बीज में संपूर्ण वृक्ष की संभावना छिपी रहती है, वैसे ही गायत्री मंत्र में संपूर्ण वेदों, धर्मग्रंथों और आध्यात्मिक साधनाओं का सार संचित है।

गायत्री और उसकी प्राण प्रक्रिया प्राणायाम की गायत्री साधना में क्या भूमिका है? गायत्री मंत्र का जप तब और भी शक्तिशाली हो जाता है, जब उसे प्राणायाम के साथ जोड़ा जाता है।

भारतीय संस्कृति के निर्माता यज्ञ पिता गायत्री माता

गायत्री जप एक आवश्यक नित्य कर्तव्य है। इस धर्म - कर्तव्य की उपेक्षा करने वालों को शास्त्रकारों ने ' शूद्र ' कहा है । मनुष्य का हाड़मांस का शरीर माता के गर्भ से उत्पन्न होता है , किन्तु आध्यात्मिक जीवन गायत्री माता के द्वारा ही मिलता है । यह दूसरा जन्म होने पर व्यक्ति द्विज कहलाता है । जहाँ गायत्री की नियमित साधना होती है , वहाँ कल्याण की निरन्तर वर्षा होती रहती है।

गायत्री माता ऐसी नहीं है कि आपके मंत्र गलत हो जाएँ तो उसके लिए जान की ग्राहक बन जाए। आपके अक्षर गलत हो जाते हैं तो जाने दीजिए। विधि में आप कहीं भूल करते हैं तो हमारी जिम्मेदारी। नवरात्रि अनुष्ठान में हम कहा करते हैं कि विधि आपकी गलत हो जाए, तो उसका पाप हम पर लगा दीजिए। विधि की कोई कीमत नहीं है, जैसी विधि आती हो, कर लीजिए, पर विद्या के बारे में ध्यान रखिए। -

ॐ भूर्भुवः स्वः।तत्सवितुर्वरेण्यं।भर्गो देवस्य धीमहि।धियो यो नः प्रचोदयात॥

"गायत्री केवल मंत्र नहीं, यह भारतीय संस्कृति की जीवन-रेखा है—जो साधक को आत्मिक शक्ति और राष्ट्र को दिव्यता प्रदान करती है।"

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

ऋग्वेद उवाच-

गायत्री परब्रह्म और पराशक्ति हैं.

गायत्री ॐ स्वरूपा हैं.

ब्रह्म की उदभाविका हैं.

वेदमाता, देवमाता और विश्वमाता हैं.

सूर्य की शक्ति हैं.

पाप-नाशिनी और सुख-स्वरूपा हैं.

गायत्री कामधेनु, कल्पवृक्ष, अमृत और पारस हैं.

"गायत्री की त्रिपदा साधक को शरीर, मन और आत्मा — तीनों स्तरों पर पूर्णता की ओर ले जाती है।"

गायत्री महाविज्ञान

गायत्री मंत्र में ईश्वर से सद्बुद्धि के लिए प्रार्थना की गई है सद्बुद्धि के बिना धन, वैभव, शक्ति आदि सभी निष्फल है। जिन्हें सद्बुद्धि प्राप्त है, उन्हें किसी बात की कमी नहीं रहती। रोग, शोक, दुःख, दारिद्र आदि उसे परेशान नहीं कर सकते। गायत्री वह सतोगुणी शक्ति है, जो साधकों को बलात् पशुतत्त्व से ऊपर उठाकर देवतत्त्व की ओर ले जाती है।

"रमण महर्षि कहते हैं कि जब मन बाहरी पहचान में उलझा रहता है, तब भ्रम और दुख जन्म लेते हैं। पर जब हम अपने सच्चे स्वरूप—शुद्ध चेतना, आत्मा—को पहचान लेते हैं, तब जीवन में वह शांति प्रकट होती है, जो कभी नष्ट नहीं होती।"

अपना बिगड़ा हुआ स्वास्थ्य, घर के अन्य लोगों का बिगड़ा हुआ स्वास्थ्य, आर्थिक तंगी, दरिद्रता, आमदनी में कमी, पारिवारिक क्लेश, आपसी मनमुटाव से होने वाली परेशानियों को दूर करने के लिए महिलाओं को गायत्री उपासना करनी चाहिए।

अयं निजः परो वेति गणना लघु चेतसाम् ।

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।।

जिन लोगों का हृदय बड़ा होता है , उनके लिए पूरी धरती ही उनका परिवार होता है और जिनका हृदय छोटा होता है उनकी सोच हमेशा अपने , पराए की ही होती है । परमार्थ मानव जीवन का सच्चा स्वार्थ है ।

॥ ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

गायत्री माता का जब मनुष्य शरीर में प्रवेश होता है तो सद्बुद्धि के रूप में होता है। साधक के विचार और स्वभाव में सत्प्रवृत्तियों का विकास होता है तथा अच्छाइयों का विकास होने लगता है।

संसार का सबसे बड़ा बल आत्मबल गायत्री साधक को गायत्री मंत्र जपने से प्राप्त हो जाता है। इसके अतिरिक्त अनेक सांसारिक लाभ जैसे बीमारी, कमज़ोरी, बेकारी, घाटा, ग्रह -कलह,मनोमालिन्य, मुकदमा, शत्रुओं का आक्रमण, दाम्पत्य सुख का अभाव, मस्तिष्क की निर्बलता, संतान -सुख कन्या विवाह में कठिनाई, परीक्षा में उत्तीर्ण होने का भय जैसी अनेक कमजोरियां गायत्री मंत्र के जप से दूर हो जाती है। अनेकों ने

शांतिकुंज सप्तर्षियों की तपस्थली, गायत्री के ऋषि विश्वामित्र, जिन्होंने गायत्री महामंत्र का साक्षात्कार किया था, ठीक इसी स्थान पर तप करते थे। सात ऋषि हैं, उनमें से एक विश्वामित्र भी हैं। विश्वामित्र कहाँ रहते थे? उनकी कुटियाएँ कहाँ थी? यहीं थी, जहाँ आज शांतिकुंज है। यह विश्वामित्र का स्थान है।

॥ ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

जो साधक नियमित रूप से ब्रह्म मुहूर्त में गायत्री मंत्र का जप करते हैं उनके पिछले जन्म के प्रारब्ध कटने लगते हैं तथा धीरे-धीरे उनका भाग्योदय होना शुरू हो जाता है।

क्षणभंगुर शरीर की चटोरी इंद्रियों की तृप्ति करने में "सुर दुर्लभ मानव जीवन" को व्यतित कर डालना कोई बुद्धिमानी की बात नहीं है।

शौनक ऋषि का मत है कि "अन्य कोई उपासनाएं करें चाहे न करें, केवल गायत्री मंत्र के जप से ही द्विज जीवन मुक्त हो जाता है। सांसारिक और पारलौकिक समस्त सुखों को पाता है।संकट के समय दस हजार जप करने से विपत्ति का निवारण होता है।"

"जब साधक श्रद्धा से जुड़ता है, तो गुरुकृपा स्वयं मार्गदर्शक बन जाती है।"

गायत्री साधना केवल मंत्रजप नहीं — यह गुरुकृपा से जुड़ने का माध्यम है। जब हम श्रद्धा से साधना करते हैं, तो जीवन की दिशा बदल जाती है।

नारी को रमणी मानने वाले साधको की गायत्री साधना संदिग्ध हैं, चाहे वे किसी भी पवित्र स्थान यथा गंगा नदी के किनारे या हिमालय में बैठकर ही क्यों न साधना करें।

भगवती गायत्री अपने शरणागत को दिव्य प्रकाश देती है , और सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देकर सुख - शांति प्रदान करती है..!!

गायत्री ही कामधेनु है ।

वेदों के अनुसार सूर्य की उपासना मनुष्य को हर तरह की अशुद्धि एवं पाप से मुक्त कर देती है।यह मनुष्यों को रोगमुक्त कर देती है। चाक्षुष विद्या को नेत्रों के विकार के उपचार के रूप में विस्तार से बताया गया है। ऋषि अगस्त्य ने भगवान श्रीराम को रावण को परास्त करने के लिए आदित्य हृदय स्त्रोत का पाठ बताया था, जो कि सूर्य उपासना का एक उच्चस्तरीय प्रयोग था। इसमें सूर्य को ब्रह्मा, विष्णु और महेश से भी महान बताया गया है। माता कुंती से कर्ण का जन्म सूर्य भगवान के मानवीयकरण को दर्शाता है। मत्स्य पुराण ब्रह्मा, विष्णु, शिव और सूर्य की उपासना का वर्णन करता है। सूर्य उपासना की परंपरा आज भी जारी है।परम् पूज्य गुरुदेव ने गायत्री महामंत्र को जन-जन के बीच लोकप्रिय कर सूर्य उपासना को इसके वैज्ञानिक स्वरूप को सुलभ किया है।

विश्वामित्र गायत्री महामंत्र के दृष्टा नूतन सृष्टि के सृजेता माने गये है। उन्होंने सप्तऋषियों सहित जिस क्षेत्र में तप करके आद्यशक्ति का साक्षात्कार किया था,वह पावन भूमि गायत्री तीर्थ शांतिकुंज ही है, जिसे हमारे मार्गदर्शक ने दिव्यचक्षु प्रदान कर दर्शन कराए थे। विश्वामित्र की सघन साधना का सूक्ष्म संस्कार यहां सघन है।

मेरे गुरुदेवने मुझे संक्षेप में बताया गायत्री मंत्र उस पारस पत्थर का नाम है, जिसको छू करके लोहा सोना बन जाया करता है और गायत्री मंत्र उस कल्पवृक्ष का नाम है, जिसके नीचे बैठकर के आदमी अपनी सारी कल्पनाएँ पूरी कर लेता है और गायत्री मंत्र उस कामधेनु का नाम है, जिसको पीकर के बूढ़ा आदमी जवान बन जाता है। गायत्री मंत्र उस ब्रह्मास्त्र का नाम है, जिसकी चोंच आदमी के व्यक्तिगत अभावों को चकनाचूर कर सकती है और उसकी मुसीबतों को और उसके मार्ग में आने वाले अवरोधों को तहस-नहस कर सकती हैं। ऐसी हैं गायत्री माँ।

॥ ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

गायत्री महामंत्र के उच्चारण से प्रसुप्त शक्तियां जागृत होती है। शरीर में व्याप्त प्राणाग्नि में तीव्र स्पंदन होने लगता हैं व साधक का वर्चस्व बढ़ने लगता है।

ब्रह्म मुहूर्त में गायत्री का जप करने से चित्त शुद्ध होता है और हृदय में निर्मलता आती है।शरीर निरोग रहता है, स्वभाव में नम्रता आती है, बुद्धि सूक्ष्म होने से दूरदर्शिता बढ़ती है और स्मरण शक्ति का विकास होता है।

जय वेद माता गायत्री

"मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता स्वयं है... विचार ऊँचे रखो, जीवन अपने आप ऊँचा उठ जाएगा।" —

गायत्री मंत्र को मंत्रों का मुकुट मणि कहा गया है। इसमें बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करने के लिए प्रार्थना है। मनुष्य को सद्बुद्धि आ जाएं तो उसे भौतिक और आध्यात्मिक दोनों लाभ प्राप्त होते हैं।

गायत्री मंत्र के ब्राह्मी स्वरुप की उपासना करने से साधक के अंतःकरण में ब्रह्मा-ज्ञान, तत्वबोध, ऋतम्भरा प्रज्ञा एवं सूक्ष्म दृष्टि का आविर्भाव होता है, जिससे माया का अज्ञानांधकार हट जाता है। जो ज्ञान हजारों पुस्तकों को पढ़ने और हजारों विद्वानों के प्रवचन सुनने से प्राप्त नहीं होता वह ब्राह्मी शक्ति की कृपा से साधक के अंतःकरण में स्वयं प्रकट हो जाता है।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्।

बिना गायत्री के जिन सब मंत्रों को लोग सिद्ध करते हैं वे क्षणिक चमत्कार दिखा कर शक्तिहीन हो जाते हैं। जिनके मूल में ठोस शक्ति होगी वही सफलता देर तक ठहरेगी और कठिन कार्यों को भी पूरा करेगी। गायत्री से रहित मंत्र चिरस्थायी और तीव्र शक्ति सम्पन्न नहीं होते, उनके लिये किया गया श्रम बहुत कम लाभ दे पाता है।

गायत्री मंत्र का नियमित रूप से जप करने से मानसिक विकास होता है साधक के अंदर तर्क शक्ति, तुलना शक्ति, स्मरण शक्ति, लेखन शक्ति और कल्पना शक्ति का विकास होता है।

मेरा निज अनुभव है कि गायत्री आत्मोन्नति के लिए अचूक उपाय है। अनेकों को इस मार्ग पर चलकर आशाजनक लाभ उठाते मैंने देखा है। इसलिए यह दृढ़ विश्वास हो गया है कि जो भी माता का अंचल पकड़ेंगे आत्मोन्नति की दिशा में अवश्य ही ऊँचे उठेंगे।

गायत्री माता साधकों को सबसे महत्वपूर्ण चीज " सद्बुद्धि" देती है। जिसके पास सद्बुद्धि है वह दुनिया को मुट्ठी में कर सकता है। देवता आप्त काम होते हैं क्योंकि उनके पास सद्बुद्धि होती है। सद्बुद्धि के अभाव में व्यक्ति निरर्थक कामनाएं बढ़ाते चलता है और जीवन भर इनकी पूर्ति की उधेड़बुन में लगकर दुखी रहता है।

बुराइयों का, अज्ञानांधकार का नाश करने वाली परमात्मा की शक्ति भर्ग कहलाती हैं। इस शक्ति की भी हमें उतनी ही आवश्यकता है, जितनी वरेण्य की। गायत्री साधकों को नियमित रूप से आसूरी वृतियों का निरीक्षण करते रहना चाहिए और उनका नित्य दमन करना आवश्यक है।

भारद्वाज ऋषि कहते हैं - ब्रह्मा आदि देवता भी गायत्री मंत्र का जप करते हैं, वह ब्रह्म साक्षात्कार कराने वाली है।

शरीर और मन में सतोगुणो की मात्रा बढ़ने का फल आश्चर्यजनक है। स्थूल दृष्टि से यह लाभ अनुभव न होता हो किन्तु सूक्ष्म शरीर के संबंध में जो लोग अधिक जानकारी रखते हैं उन्हें मालूम है कि तम और रज का घटना और उसके स्थान पर सत् तत्व का बढ़ना ऐसा ही है जैसे शरीर में भरें हुए रोग मल, विष इत्यादि का घट जाना और उनके स्थान पर रक्त और वीर्य की मात्रा बढ़ जाना। ब्रह्म मुहूर्त में नियमित रुप से गायत्री महामंत्र का जप करते रहने से साधकों को यह लाभ अनायाास ही मिलते हैं।

गायत्री महामंत्र की उपासना एक अत्युत्तम सरल और शीघ्र सफल होने वाला मार्ग है। इस मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति जीवन के चरम लक्ष्य ईश्वर प्राप्ति तक पहुंचते हैं। ब्रह्म और गायत्री दोनों एक ही है। यह गायत्री समस्त प्राणियों में आत्मा के रूप में विद्यमान है तथा मोक्ष का मूल कारण है।

सती सावित्री द्वारा अपने पति के प्राण वापस लाने की कथा प्रसिद्ध है। अपने पति के प्राण जब उसने अपने तपोबल से यमराज से वापस ले लिए तब सावित्री ने सुअवसर का लाभ उठाकर धर्मराज से कुछ आध्यात्मिक प्रश्न पूछने लगी। उसने पूछा - "भगवन्! कौन व्यक्ति आपके पुर अर्थात् नरक को नहीं जानते?नरक की यात्रा से कैसे बचा जा सकता है?

इसका उत्तर देते हुए यमराज ने भगवती महाशक्ति गायत्री की महिमा बताई और कहा - "जो निष्ठापूर्वक उसकी उपासना करते हैं और तपश्चर्या द्वारा अपने जीवन को आत्मशक्ति संपन्न बनाते हैं, उन्हें नरक की पीड़ा सहन करने की आवश्यकता नहीं पड़ती है।

चरक ऋषि कहते हैं - जो ब्रह्मचर्य पूर्वक गायत्री उपासना करता है और आंवले के ताजे फलों का सेवन करता है वह दीर्घजीवी होता है।

गायत्री मंत्र का प्रत्येक अक्षर अपरिमित शक्ति का भाण्डागार है, अपने में दिव्य प्रेरणाएं एवं शिक्षाएं निहित किये हुए हैं। इस मंत्र की उपासना करके एवं इसमें सन्निहित प्रेरणाओं को जीवन में उतारने से भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही क्षेत्रों में असीम प्रगति की जा सकती है।

गंगा शरीर को पवित्र करती है और गायत्री आत्मा को। गंगा मृतक को तारती है और गायत्री जीवितों को, गंगा स्नान से पाप धुलते हैं और गायत्री उपासना से पाप वृतियां निर्मल होती है।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

दिव्य पुरुष भीष्म पितामह का युधिष्ठिर को उपदेश:

गायत्री मंत्र ही सत्य एवं सनातन है। यह सभी प्राणियों का हृदय एवं सनातन श्रुति है। चंद्रवंशी, सूर्यवंशी, रघुकुल और कुरुवंश में उत्पन्न सभी राजा नित्य पवित्र भाव से गायत्री मंत्र का जप करते थे। गायत्री मंत्र समस्त संसार के प्राणियों की परम गति का आधार है।

स्वास्थ्य का केंद्र सूर्य है। सूर्य में रोग निवारण की प्रचंड शक्ति मौजूद हैं। इसका प्रयोग करने से शरीर के विभिन्न प्रकार के कष्ट साध्य रोग दूर हो सकतें हैं और शारीरिक कष्टों से छुटकारा पाकर मनुष्य निरोगता पूर्वक दीर्घ जीवन प्राप्त कर सकता है। संतान उत्पादक तत्व सूर्य से आते हैं। कुंती ने कुमारी अवस्था में सूर्य का आवाहन कर कर्ण को जन्म दिया था। संतान रहित महिलाओं के लिए गर्भपात होते रहने वाले प्रसव तथा जननेन्द्रिय संबंधी अवस्था वाली महिलाओं के लिए सूर्य गायत्री मंत्र का उपयोग विशेष फलप्रद होता है।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं

आद्यशक्ति का साधक पर अवतरण ऋतम्भरा प्रज्ञा के रूप में होता है और साधक ब्रह्मर्षि बन जाता है। साधक की अंतरात्मा में निष्ठा, प्रज्ञा, एवं श्रद्धा की उच्चस्तरीय आस्थाएं प्रगाढ़ बनती है और परिपक्व होती चली जाती है। निष्ठा अर्थात् सत्कर्म, प्रज्ञा अर्थात् सद्ज्ञान। श्रद्धा अर्थात् सद्भाव।

इन्ही की सुखद प्रतिक्रिया तृप्ति,तुष्टी एवं शांति के रूप में साधक के सामने आती हैं। तृप्ति अर्थात् संतोष, तुष्टी अर्थात् समाधान, शांति अर्थात् उल्लास। आद्यशक्ति की शरणागति के लिए बढ़ता हुआ हर क़दम साधक को इन्हीं विभूतियों से लाभान्वित करता चलता है।

गायत्री ऋतम्भरा प्रज्ञा है। ऋतम्भरा अर्थात् आध्यात्मिक कल्याण करने वाली। तथ्यों का अनावरण करने वाली। विशेषताओं और विभूतियों का दर्शन कराने वाली विवेक बुद्धि। इसी को दिव्य दृष्टि कहते हैं।

देवमाता

वेदमाता

विश्वमाता

देवत्व प्रदान करने वाली देवमाता - सद्ज्ञान का अजस्त्र अनुदान देने वाली वेदमाता, व्यापक व्यवस्था को सुरम्य बनाने वाली विश्वमाता का अंचल पकड़ने वाला न अभाव सहता है न संकट सहता है। यह भूलोक की कामधेनु है जिसका पय-पान करने वाले न जरा-जीर्ण होते हैं, न कुरूप, न मृतक-मूर्छित। जिसका प्रहार अनौचित्य पर ब्रज की तरह टूटता है। उस ब्रह्मास्त्र से संपन्न व्यक्ति को किसी से परास्त नहीं होना पड़ता।

नियमित रूप से गायत्री मंत्र का जप करने से शरीर में सत् तत्व की वृद्धि होती है। इन्द्रियों के भोगों में भटकने की गति मंद हो जाती है। चटोरापन, बार-बार खानें की इच्छा जैसी बुरी आदतें धीरे-धीरे कम होने लगती है। इसी प्रकार कामेन्द्रिय की उत्तेजना सतगुणी विचारों के कारण संयम हो जाती है। ब्रहाचर्य

के प्रति श्रद्धा बढ़ने से वीर्य रक्षा का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। दिनचर्या सतोगुणी हों जाती है जिससे दीर्घ जीवन की जड़ें

दीपक - राग गाने से दीपक जल उठते हैं, मेघ- मल्हार गाने से वर्षा होने लगती है, वेणुनाद गाने से सर्प लहराने लगते हैं, मृग सुध-बुध भूल जाते है और गाये अधिक दूध देने लगती हैं। कोयल की बोली सुनकर काम भाव जागृत हो जाता है। सैनिकों के क़दम ताल मिलाकर चलने की शब्द गति से लोहे के पुल तक गिर सकते हैं इसलिए पुलो को पार। करते समय सैनिकों को क़दम से क़दम न मिलाकर चलने की हिदायत दी जाती है। इसका कारण यह है कि शब्दों के कंपन सूक्ष्म प्रकृति से अपनी जाति के अन्य परमाणुओं को लेकर ईथर का परिभ्रमण करते हुए जब अपने उद्गम केंद्र पर लौट आते हैं तो उनमें एक विशेष प्रकार की विद्युत शक्ति भरी पड़ी होती है। मंत्रों द्वारा विलक्षण कार्य होने का यही कारण है। गायत्री मंत्र द्वारा भी इसी प्रकार की शक्ति का आविर्भाव होता है।

सौजन्य गायत्री महाविज्ञान

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

"गायत्री मंत्र आत्मा की पुकार है, जो परमात्मा से मिलन की राह दिखाती है।"

यह मंत्र हमें अंधकार से प्रकाश की ओर, भ्रम से सत्य की ओर, ओर जड़ता से जागृति की ओर ले जाता है।

"गायत्री कोई मंत्र मात्र नहीं, वह आत्मा को देवत्व की ओर ले जाने वाली महाशक्ति है। उसका स्मरण जीवन को तप बना देता है।"

देवात्मा हिमालय के वासी दादागुरु को नमन

दादागुरु स्वामी सर्वेश्वरानंदजी ने जिस स्थान पर शांतिकुंज बनाने का निर्देश दिया था वह भूमि बंजर पड़ी थी तथा उसके प्रसुप्त संस्कारों को जगाने के लिए चोबीस लक्ष के चोबीस गायत्री महापुरश्चरण कराने के निर्देश दिए थे। इसके लिए 9 कुंवारी कन्याओं का प्रबंध किया गया, इनके द्वारा प्रारंभ में चार घंटे दिन में और चार घंटे रात्रि में जप किया जाता, बाद में यह संख्या बढ़कर 27 हो गई।

गायत्री महाशक्ति को विश्वमाता कहते है। उसके अंचल में बैठने वाले में पारिवारिक उद्दात भावना का विकास होता है। क्षुद्रता के भव-बंधनों से मुक्ति,संकीर्णता के नरक से निवृत्ति- यह दोनों ही अनुदान विश्वमाता की समीपता एवं अनुकम्पा के हैं, जिन्हें हर सच्चा साधक अपने में उमँगता बढ़ता देखता है।

गायत्री की एक धारा "श्री "है। श्री अर्थात लक्ष्मी अर्थात, समृद्धि। गायत्री की कृपा से मिलने वाले वरदानों में से एक लक्ष्मी भी है। जिस पर अनुग्रह उतरता है, वह दरिद्र नहीं रहता।

ऐश्वर्यवर्धिनी लक्ष्मी

योगियों को जो लाभ दीर्घकाल तक कष्टसाध्य तपस्याएं करने से प्राप्त होता है -वही लाभ गायत्री उपासकों को स्वल्प प्रयासों से ही प्राप्त हो जाता है।

पुराणों में उल्लेख है कि सुरलोक में देवताओं के पास कामधेनु गाय है, यह अमृतोपम दूध देती है और इसे पीकर देवता लोग सदैव संतुष्ट और प्रसन्न रहते हैं। इस गौ की यह विशेषता है कि उसके समीप कोई अपनी कामना लेकर जाता है तो उसकी इच्छा तुरंत पूरी हो जाती है।यह कामधेनु मां गायत्री ही है। यह साधकों के सभी कष्टों का समाधान करती है। सौजन्य -गायत्री महाविज्ञान

॥ ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

जो महिलाएं गर्भवती हैं, वे प्रातः सूर्योदय से पूर्व या रात्रि सूर्य अस्त के बाद अपने गर्भ में सूर्य सदृश्य प्रचंड तेज़ का ध्यान किया करें और मन ही मन गायत्री मंत्र का जप करें तो उनका बालक तेजस्वी बुद्धिमान, चतुर दीर्घजीवी तथा तपस्वी होता है।

वशिष्ठ, याज्ञवल्क्य, अत्रि, विश्वामित्र, भारद्वाज, नारद, कपिल, कणादि, गौतम, व्यास, शुकदेव, दधीचि, वाल्मीकि, वन, शंख, लोमश, तैत्तिरीय, जावालि, उद्दालक, वात्स्यायन, दुर्वासा, परशुराम, पुलिस्त, दत्तात्रेय, अगस्त्य, सनतकुमार, कण्व, शौनक आदि ऋषियों के विस्तृत जीवन चरित्र लिखकर इस लेख में यह बताने का स्थान नहीं कि उन्होंने वेदमाता की उपासना करके किस प्रकार परम सिद्धि प्राप्त की थी और गायत्री की शक्ति द्वारा वे कितनी महान् सफलताएँ सम्पादित कर सके थे। इतिहास पुराण के ज्ञाताओं से इन महर्षियों के चरित्र छिपे नहीं हैं।

पुस्तकः गायत्री की दिव्य शक्तियां

गायत्री माता इतनी दयालु हैं कि वह अपने पुत्र का दुःख सहन नहीं कर सकती और उसे दुःख से सुख, अज्ञान से ज्ञान, असत्य से सत्य की ओर ले जाती है। उसके त्रितापों को नष्ट कर देती है। उसके अभावों को दूर करती है लौकिक और पारलौकिक सब प्रकार की उन्नति में सहायक सिद्ध होती है। मनुष्य को मनुष्य बनना सिखाती है। उसे अपने पारिवारिक व सामाजिक कर्तव्यों का ज्ञान कराती है ताकि वह पथभ्रष्ट न जाए।

जो साधक नियमित रूप से श्रद्धा पूर्वक गायत्री की उपासना करते हैं,उनके हितों की रक्षा माता स्वयं करती है एवं उस साधक के शत्रुओं के नाश हेतु मां दुर्गा का प्रचंड रूप धारण करती है।

शत्रुओं से संरक्षण दुर्गा

गायत्री मंत्र - एक व्यक्ति से पूरे समाज तक जागरण की ध्वनि

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

गायत्री मंत्र केवल आत्मिक उन्नति नहीं करता — यह सामूहिक चेतना को भी जाग्रत करता है। जब एक साधक मंत्र का जप करता है, तो उसकी ऊर्जा केवल उसके भीतर नहीं रहती — वह परिवार, समाज और राष्ट्र तक फैलती है।

पुराणों में उल्लेख है कि सुरलोक में देवताओं के पास कामधेनु गाय है, यह अमृतोपम दूध देती है और इसे पीकर देवता लोग सदैव संतुष्ट और प्रसन्न रहते हैं। इस गौ की यह विशेषता है कि उसके समीप कोई अपनी कामना लेकर जाता है तो उसकी इच्छा तुरंत पूरी हो जाती है। यह कामधेनु मां गायत्री ही है। यह साधकों के सभी कष्टों का समाधान करती है। सौजन्य -गायत्री महाविज्ञान

गायत्री मंत्र सूर्य भगवान के आवाहन का मंत्र है। और जब उसका उच्चारण किया जाता है तभी जप करने वाले पर प्रकाश की एक बड़ी लपक स्थूल सूर्य से पड़ती है। प्रार्थना के समय चाहें सूर्य उदय हो रहा हो, चाहें मध्य रात्रि का समय हो, सूर्य की लपक जप करने वाले पर अवश्य पड़ती है। रात्रि के समय यह लपक पृथ्वी को भेदकर आती है।

आत्म - शौधन, आत्म - निर्माण, इन्द्रिय - निग्रह और मनोजय के साथ जुड़ी हुई अपनी उच्च स्तरीय गायत्री साधना के माध्यम से आत्मदेव को सजग बनाकर गुरुदेव ने क्या पाया, इसकी अविज्ञात उपलब्धियां इतनी अधिक और अद्भुत है कि सहसा किसी को विश्वास ही न हो। इस पर अभी पर्दा पड़ा रहना ही उचित है। समय आने पर वे आज़ के अविज्ञात तथ्य कल प्रमाणित होंगे।

छन्दग्योपनिषद से -

गायत्री ही प्राण है

अतः वही समस्त विश्व में व्याप्त है। इस प्राण में ही समस्त देवता सन्निहित हैं। यह प्राण रूप गायत्री ही जगत की आत्मा है वाणी नेत्र आदि समस्त इन्द्रियों में समाविष्ट प्राण की संरक्षक होने के कारण उसे गायत्री कहते हैं।

जो गायत्री उपासना करता है वह विद्वान, प्राणवान, दीर्घजीवी यशस्वी, संपन्न उदार और महामानवी बनता है।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

जैसे ब्रह्मास्त्र हर हाल में अपना लक्ष्य-भेदन करके रहता है, वैसे ही गायत्री-उपासना भी साधक के लिए भौतिक और आध्यात्मिक उत्थान का लक्ष्य भेदन करके रहती है।

इसमें संशय और संदेह की कोई गुंजाइश ही नहीं है। कभी-कभी किसी विशेष कारण से फल प्राप्ति में देर हो सकती है, पर फल प्राप्ति होंगी अवश्य। गायत्री साधना कभी भी निष्फ़ल नहीं होती है।

संसार का कोई बड़े से बड़ा असुर, पाप, संकट, विघ्न या मनुष्य ऐसा नहीं है जो गायत्री को चुनौती दे सके, उससे अधिक प्रबल सिद्ध हो सके, उसे पराजित कर सके। उचित रूप से साधना की हुई गायत्री संकटों को भी पछाड़ती-परास्त करती है, स्वयं कभी पराजित या परास्त नहीं होती।

गायत्री मंत्र के प्रचंड तेज से कुंडली में अमंगल करने वाले जितने भी दोष हैं वे जलकर भस्म हो जाते हैं।

गायत्री: सूक्ष्म शक्तियों का अनंत स्रोत!

ॐ भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात ॥

"गायत्री वह दिव्य स्पंदन है, जो ब्रह्मांड के हर कण में समाया है; इसे जानने से हम स्वयं को और सृष्टि को गहराई से समझते हैं।"

साधकों की गायत्री साधना फलवती होने का एक ही पैमाना है कि उनके अंदर सद्गुणों का कितना विकास हुआ और यदि हंस की तरह अच्छाईयां उभर रही है तो समझो गायत्री मंत्र फलवती हो रहा है।

गायत्री महामंत्र के जप की विधि

१. गायत्री मंत्र का जप प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व से लेकर सूर्योदय के बाद तक किया जाना चाहिए।

२. संध्याकाल में सूर्यास्त से कुछ समय पहले शुरू करके सूर्यास्त के बाद तक जप करना चाहिए।

३. यदि इस समय के अतिरिक्त जप करना हो, तो मौन रहकर या मानसिक रूप से जप करना चाहिए।

४. जप के लिए कुशासन या सूती आसन का प्रयोग करना चाहिए।

५. जप करते समय सीधे बैठें और रीढ़ की हड्डी को सीधा रखें।

६. जप के लिए तुलसी या चन्दन की माला का प्रयोग करना उत्तम माना जाता है।

गायत्री मंत्र का प्रभाव

गायत्री मंत्र के नियमित जप से बौद्धिक क्षमता का विकास होता है, मानसिक शांति मिलती है और नकारात्मक विचारों का नाश होता है। यह मंत्र जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है और व्यक्ति को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करता है।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

गायत्री मंत्र का अर्थ:

उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अन्तःकरण में धारण करें, जो हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करे।

"सद्बुद्धि की देवी माता गायत्री की आराधना से मनुष्य के भीतर के दुर्गुण और कुविचार दूर होते हैं, जिससे जीवन में सुख, शांति और समृद्धि का मार्ग प्रशस्त होता है।"

गायत्री साधना का वैज्ञानिक आधार

मंत्र के अक्षरों का उच्चारण शरीर के विभिन्न चक्रों और ग्रंथियों को झंकृत करता है, जिससे मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य में अभूतपूर्व सुधार होता है। शब्द शक्ति के कम्पन अंतःकरण को पवित्र बनाते हैं।

परम पूज्य गुरुदेव पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के अनुसार, गायत्री मंत्र केवल एक मंत्र नहीं है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति की आत्मा और मानव कल्याण का सबसे बड़ा माध्यम है।

ब्रह्म की आदि शक्ति का नाम गायत्री है। वह त्रिगुणात्मक है। ब्रह्म परायण साधक उसके ही रुप की आराधना करते हैं। आध्यात्मिक उन्नति के लिए, आत्मसाक्षात्कार के लिए, मुक्ति के लिए उसी का आक्षय लिया जाता है। तमोगुणी तांत्रिक, मारण, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन, सम्मोहन आदि में क्लीं तत्व का पुरश्चरण किया जाता है। ह्रीं सरस्वती के रूप में एवं श्रीं लक्ष्मी के रुप में पूजी जाती। है।

ब्रह्म मुहूर्त में नियमित रूप से गायत्री महामंत्र का जप करते रहने से साधक की आध्यात्मिक उन्नति होती है और माता की कृपा से उत्कर्ष पथ की यात्रा सफल होती हैं और साधक का उत्साह बढ़ जाता है और रास्ते की कठिनाइयों से डरने के बजाय उन्हें परास्त करने का साहस पैदा हो जाता है।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

जिन भोगों को भोगने में साधारणतः मृत्यु तुल्य कष्ट होने की संभावना थी वे गायत्री की कृपा से एक छोटा फोड़ा बनकर सामान्य कष्ट के साथ भुगत जाते हैं और अनेक जन्मों तक भुगत जाने वाली कठिन पीड़ायें हल्के-हल्के छोटे-छोटे रूप में इसी जन्म में समाप्त होकर आनंदमय भविष्य का मार्ग साफ कर देती है। इस प्रकार के कष्ट भी गायत्री माता की कृपा ही समझना चाहिए।

गायत्री उपासना का लाभ और चमत्कार देखने के इच्छुक साधकों को केवल साधना विधान के कर्मकांड की बारिकियों को ही नहीं ढूंढ़ते रहना चाहिए वरन् अपनी शारीरिक और मानसिक भूमिका का भी परिष्कार करने के लिए सचेष्ट रहना चाहिए। आध्यात्मिक उपासनाओं के पथ पर गतिशील होने के आकांक्षी साधक को अपने व्यक्तित्व की उत्कृष्टता बढ़ाना तथा स्थिर रखना नितान्त आवश्यक है। यह एक अनिवार्य शर्त है।

गायत्री साधना निष्फल नहीं जाती; यह अदृश्य जगत् में एक ऐसी स्वर-लहरी उत्पन्न करती है, जिसका फल हमारे जीवन में अवश्य प्रकट होता है।

गायत्री मंत्र: विज्ञान और अध्यात्म का अद्भुत संगम!

ब्रह्म मुहूर्त में नियमित रूप से गायत्री महामंत्र की साधना करते रहने से साधक को मानसिक कष्ट में तत्काल शांति मिलती है। साधक का आत्मबल इतना इतना प्रगाढ़ हो जाता है कि बड़ी से बड़ी कठिनाई उसे तुच्छ मालूम पड़ती है। साधक को यह विश्वास हो जाता है कि बुरी से बुरी परिस्थिति भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती

शंख स्मृति में कहा गया है कि दस सहस्र बार गायत्री मंत्र का जप करने से मन का मैल साफ़ हो जाता है तथा एक लाख बार जपने से महापापियों के भी अंतःकरण पवित्र हो जातें हैं।

गंगा जल की तरह गायत्री महामंत्र भी मनुष्य की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है और उसे सभी प्रकार से सुखी बनाता है। आत्मकल्याण के सभी तत्व उसके अंदर मौजूद हैं। स्वर्ग मुक्ति आत्म साक्षात्कार ईश्वर दर्शन के सभी तत्व उसमें मौजूद हैं। कोई आध्यात्मिक लाभ एवं चमत्कार ऐसा नहीं है जो गायत्री माता की शक्ति से प्राप्त न हो सकें।

जो गायत्री को छोड़कर दूसरे मंत्रों की उपासना करता है वह दुर्बुद्धि मनुष्य पकाएं हुए अन्न को छोड़कर भिक्षा के लिए घुमने वाले पुरुष के समान है।

शिवपार्वती संवाद विज्ञानभैरव विधि: 3

श्वास मुड़े जब ऊपरहि, फिर नीचे बहि जाए।

दो मोड़ों में सत्य है, जो जाने सो पाय॥

आवत जाती श्वास एक, वर्तुल रचे अनूप।

जहाँ मिल जाती शांति है, ताहि देखो रूप॥

नाही दूजी श्वास है, आवत जाति समान।

मोड़ बिंदु जो देख ले, पावे ब्रह्म प्रमाण॥

रेख न दूजी चाल है, एकहि धारा धार।

जहाँ मुड़ जाती श्वास वो, वहीं परम विस्तार

गायत्री को जान लेने से समस्त विद्याओं का वेत्ता हो जाता है और उसने केवल गायत्री की ही उपासना नहीं की अपितु सात लोकों की भी उपासना कर ली।

गायत्री मंत्र की चेतनात्मक धारा ऋतम्भरा प्रज्ञा के रूप में काम करती हैं और जहां उसका निवास होता है वहां ब्राह्मणत्व एवं दैवत्व का अनुदान बरसता चला जाता है। जो भी इस महाशक्ति का लाभ उठाना चाहते हैं उन्हें अपने व्यावहारिक जीवन में ब्राह्मणत्व का अवतरण भी करना चाहिए। चरित्रवान व्यक्ति की थोड़ी सी उपासना भी इतना लाभ दिखाती हैं जितनी दुश्चरित्र व्यक्ति के आजीवन क्रिया कृत्य भी नहीं कर सकते हैं।

गायत्री मंत्र - ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

मंत्र के फायदे

गायत्री मंत्र बहुत ही चमत्कारी और शक्तिशाली माना गया है। शास्त्रों के मुताबिक इस मंत्र के 24 अक्षर 24 महाशक्तियों के प्रतीक होकर शक्ति बीज हैं। वेदों में गायत्री शक्ति ही प्राण, आयु, शक्ति, तेज, कीर्ति और धन देने वाली मानी गई है। यही वजह है कि गायत्री मंत्र को महामन्त्र पुकारा जाता है, जो शरीर की कई शक्तियों को जाग्रत करता है, जिससे उपासक ऊर्जावान, दीर्घ और निरोगी जीवन प्राप्त करता है।। ब्रह्मदत्त त्यागी हापुड़

परमात्मा की प्रार्थना का सर्वोत्तम मंत्र गायत्री है. इसमें ईश्वर से वह वस्तु माँगी गई है, जो इस संसार में, इस जीवन में सर्वोपरि है. 'बुद्धि की सन्मार्ग की ओर प्रगति' ईश्वर की प्रत्यक्ष कृपा है. गायत्री की प्रतिष्ठा का अर्थ सद्बुद्धि की प्रतिष्ठा है.

गायत्री प्राणो का त्राण - रक्षण करती है।'गय' कहते हैं - प्राण को, उस प्राण का जो रक्षण करें उसका नाम गायत्री है।यह प्राण का अजस्त्र भंडार है। इस छोटे से भाग पर अधिकार कर लेने पर साधक अपार शक्ति का स्वामी बन जाता है।

गायत्री सद्बुद्धि का प्रतीक है। गायत्री मानवता की प्रतीक हैं। गायत्री सत्य और सात्विकता की प्रतीक है। गायत्री - उदारता, प्रेम, सद्भाव, सहानुभूति, सेवा, संयम, एवं सच्चरित्रता। का प्रतिनिधित्व करती हैं।इन तत्वों को जीवन में हृदयंगम करने से ही हम गायत्री माता की सच्ची पूजा करते हैं, इन्हीं गुणों को अपनाने से उनका अनुग्रह हमें प्राप्त होता है। जिस प्रकार तिरंगा झंडा भारतीय राष्ट्रीयता का प्रतीक है, उसी प्रकार गायत्री भी मनुष्य के भीतर रहने वाले देवत्व का प्रतीक है। असुरता से हटाकर देवत्व की और बढ़ाने वाली प्रवृत्ति, भावना, विचारधारा, एवं अंतः प्रेरणा को गायत्री कहना चाहिए। जिस प्रकार से सिर पर रखी हुई शिखा हिंदू धर्म की प्रतीक है, उसी प्रकार मनुष्य में जो देवत्व है उसकी प्रतीक गायत्री है। भारतीय संस्कृति में जो महान है जो आध्यात्मिक

गायत्री वेद जननी हैं, पापों का नाश करने वाली हैं।

शंख स्मृति

इससे बड़ी पवित्र करने वाली शक्ति न तो इस लोक में हैं और न स्वर्ग लोक में। नर्क रूपी समुद्र में गिरे हुए को वह हाथ का सहारा देकर उबारती है। गायत्री जप करने वाला कमल-पत्रवत् रहता है। इसके ऊपर पाप नहीं चढ़ सकता।

नारद पुराण में कहा गया है - बुद्धिमानों में श्रेष्ठ, अपने नित्य नियमित सभी कार्यों को करते हुए व्याहृतियां सहित तथा प्रणव के उच्चारण सहित गायत्री को जो पुरुष सदा जपते हैं, उनको कहीं भी भय नहीं है।दस बार जपने से रात्रि तथा दिन के लघु दोषों का निवारण होता है।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियों यो नः प्रचोदयात्

गुर्वी कहते हैं भारी को। गायत्री को एक साधारण-सी चीज नहीं मानना चाहिए, उसकी गुरुता इतनी भारी है कि संसार के सारे भौतिक पदार्थों को भी उसकी तुलना में तुच्छ माना जा सकता है। जिस क्षेत्र में भी गायत्री की शक्ति का चमत्कार देखा जाय वह अद्भुत और अद्वितीय दिखाई पड़ेगा।

गायत्री को ब्रह्मास्त्र कहा गया है, क्योंकि कभी किसी की गायत्री साधना निष्फल नहीं जाती। इसका प्रयोग कभी व्यर्थ नहीं होता।

गायत्री का प्रतिदिन एक सहस्त्र जप करना अत्युत्तम है। शत मंत्र जप मध्यम है। दस मंत्र स्वल्प है। अपनी सामर्थ्यानुसार दस, सौ या हजार बार गायत्री जप करना चाहिए। ऐसा करने वाला पापों में लिप्त नहीं होता।

कुशला ब्रह्मवार्तायां वृत्तिहीनाः सुरागिणः।

ते ह्यज्ञानितमा नूनं पुनरायान्ति यान्ति च

जो ब्रह्म की वार्ता करने में कुशल है किन्तु ब्राह्मी वृत्ति से सर्वथा रहित और रागयुक्त है, निश्चित रूप से वे अत्यन्त ही अज्ञानी है और बार बार जन्मते-मरते रहते है

आदि शंकराचार्य

विवेक चूड़ामणि

सूर्य के समान तेजस्वी गायत्री का स्थान शिर है। कषाय और कल्मषो का निराकरण होने पर आत्मा के भीतर की दिव्य विशेषताएं सहज ही प्रकट होती और प्रखर बनती है।अंगारे पर चढ़ी राख हटाने पर उसकी धूमिल आभा प्रकट होने लगती हैं यही स्थिति आत्मा की है।

गायत्री पर श्रद्धा करने वाले मनुष्य की आत्मा पवित्र हो जाती है और उसके सब कार्य यज्ञमय होते हैं।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

गायत्री ईश्वर की सर्वोपरि उपासना मानी गई है। यह महाशक्ति सद्-बुद्धि की देवी है। गायत्री जप से सद्-बुद्धि का उदय होता है, भावनायें शुद्ध होती है और आंतरिक प्रगति का पथ प्रशस्त होता है। इसलिए जिन्हें पूरा गायत्री मंत्र याद हो सके वे पूरा जप किया करें। अशिक्षित "ॐ भूर्भुवः स्वः" इतने से भी काम चला सकते हैं।

गायत्री ही तप है, गायत्री ही योग है, गायत्री ही सबसे बड़ा ध्यान और साधन है। इससे बढ़कर सिद्धिदायक साधन और कोई नहीं है।

गायत्री मंत्र की साधना से साधक ब्रह्म तेज़ संपन्न हो सकता है। ब्रह्म तेज़ संपन्न को न शत्रुओं का भय रहता है न दस्युओं का, न अग्नि का, न राजा का, न शस्त्र का, वह सब प्रकार के भयों से मुक्त होकर निर्भय बन जाता है।

देवता और कोई नहीं, मनुष्य शरीर में निवास करने वाली सत्प्रवृत्तियाँ ही हैं।

तुम भक्तन की भक्त तुम्हारे।

जननिहि पुत्र प्राण ते प्यारे।।

परम पोषक वैष्णवी

गायत्री दयालु माता है वह अपने पुत्रों को बहुत कुछ देने को तत्पर रहती है, पर देती उन्हें ही है जो पात्र हैं। अधिकारी लोग बड़ी-बड़ी लालसायें और कामनाएँ करते हैं, पर अपनी पात्रता बढ़ाने के लिए समुचित प्रयत्न नहीं करते। ऐसी दशा में वे बड़े-बड़े मनोरथ पूरे नहीं हो पाते जो साधना के तप में खरे उतरने वाले साधकों को ही उपलब्ध हो सकते हैं।

गायत्री मंत्र की उपासना से साधक के अंतराल में वह पात्रता विकसित होती है जिसके चुम्बकत्व से परब्रह्म की ऋतम्भरा विभूति को प्रचुर मात्रा में आकर्षण एवं धारण करना, सहज संभव हो सकें।

सप्त कोटि महामन्त्रों में गायत्री सर्वोपरी सेना नायक के समान है। देवता इसी की उपासना करते हैं। वही चारों वेदों की माता है।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

भगवती महाशक्ति गायत्री यह नहीं देखतीं कि साधक का पिछला जीवन कैसा रहा है, इस आधार पर वे किसी से घृणा नहीं करतीं। शरण में आने वाले को वे दिव्य प्रकाश देती हैं और उसे सन्मार्गगामी प्रेरणा देकर सच्ची सुख-शांति का अधिकारी बना देती हैं।

गायत्री मंत्र के अंदर अनेक प्रकार के ज्ञान और विज्ञान छिपे हुए हैं। अनेक प्रकार के दिव्य अस्त्र - शस्त्र बहुमूल्य धातुएं बनाना, जीवन दात्री औषधीयां, रसायन तैयार करना, वायुयान जैसे यंत्र बनाना, शाप और वरदान देना, प्राण - विद्या, कुण्डलिनि चक्र, दश महाविद्या अनेक प्रकार की योग सिद्धियां पाई जाती है। हमारे ऋषियों ने गायत्री साधना करके इन्हें प्राप्त किया था। आज़ भी हम साधना करके इन्हें प्राप्त कर सकते हैं।

नित्य पाठ के लिए "वेद शास्त्रों का निचोड़ गायत्री" बड़ी ही महत्त्वपूर्ण पुस्तक है। उसमें गायत्री गीता, गायत्री स्मृति, गायत्री अष्टक, गायत्री स्तवन, गायत्री चालीसा और गायत्री की आरती संकलित हैं। आधे घंटे में इस सबका पाठ हो सकता है। जिन्हें इतना भी अवकाश न हो वे केवल गायत्री-गीता या गायत्री-चालीसा का पाठ करके भी काम चला सकते है। इस नित्य पाठ का भी बड़ा माहात्म्य है।

हस्तत्राणप्रदा देवी पततां नरकार्णवे ।

तस्मात्तामभ्यसेन्नित्यं ब्राह्मणो हृदये शुचिः ॥

गायत्री नरक रुपी समुद्र में गिरते हुए को हाथ पकड़कर बचाने वाली है अतः द्विज नित्य ही पवित्र हृदय से गायत्री का अभ्यास करे अर्थात् जपे ।

जिस देश में दीर्घायु, बलिष्ठ प्राण, सुसन्तति, पुष्टांग पशु तथा यशस्कर, धनवान, ब्रह्मवर्चस्वी नवयुवक उत्पन्न हों, वह राष्ट्र को उन्नति के उच्च शिखर पर पहुँचा देते हैं। उन लाभों की प्राप्ति का मूल कारण सद्बुद्धि की प्राप्ति ही है। सद्बुद्धि का उद्गम केंद्र गायत्री है।

धन और यौवन अस्थिर हैं। छोटे से रोग या हानि से इनका विनाश हो सकता है। इसलिए इनका अहंकार न करके - दुरुपयोग न करके ऐसे कार्यों में लगाना चाहिए, जिससे भावी जीवन में सुख-शान्ति की अभिवृद्धि हो।

गायत्री मंत्र के जप में उच्चारित किये गये शब्द निखिल आकाश में वर्तुल प्रवाह उत्पन्न करके अपनी कक्षा में भ्रमण करते हैं और जिस कामना के साथ वे उद्भूत हुए थे, उनके अनुरूप प्रकृति के अंतराल में अभिष्ट वातावरण बनाते हैं।

गायत्री मंत्र - ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

मंत्र के फायदे

गायत्री मंत्र बहुत ही चमत्कारी और शक्तिशाली माना गया है। शास्त्रों के मुताबिक इस मंत्र के 24 अक्षर 24 महाशक्तियों के प्रतीक होकर शक्ति बीज हैं। वेदों में गायत्री शक्ति ही प्राण, आयु, शक्ति, तेज, कीर्ति और धन देने वाली मानी गई है। यही वजह है कि गायत्री मंत्र को महामन्त्र पुकारा जाता है, जो

शरीर की कई शक्तियों को जाग्रत करता है, जिससे उपासक ऊर्जावान, दीर्घ और निरोगी जीवन प्राप्त करता है।। ब्रह्मदत्त त्यागी हापुड़

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

जिस प्रकार उत्तम प्रवचन रहने से सुनने वालों में मस्तिष्कों में थोड़ी बहुत सद्द्वृत्ति बढ़ती है, उसी प्रकार गायत्री मंत्र का जप या उच्चारण करने से उनकी परम मंगल मयी तरंगे उठकर अगणित मस्तिष्कों में सूक्ष्म पर्दो तक टकराने लगती हैं। फलस्वरूप उनके मस्तिष्कों में भी किन्हीं अंशों में धार्मिकता का उदय होता है। इस प्रकार गायत्री का जप एक प्रकार से विश्व की महत्त्वपूर्ण मानसिक सेवा है।

सूक्ष्म शरीर का सारा ढांचा कोशो की सामग्री से बना हुआ है। विज्ञान की भाषा में इन्हें PHYSICAL BODY, ASTRAL BODY, MENTAL BODY, CAUSAL BODY और COSMIC BODY कहते हैं। अध्यात्म की भाषा में इन्हें अन्नमयकोश, प्राणमय कोष, मनोमय कोष, विज्ञानमय कोष एवं आनंदमय कोष कहा जाता।

गायत्री उपासना करने वालों की बुद्धि शुद्ध होती है। जिस घर में गायत्री की पूजा, उपासना, यज्ञ, स्वाध्याय, जप, तप आदि का आयोजन होता रहता है, वहाँ सदबुद्धि का स्वाभाविक प्रकाश होता है और उस परिवार में विघटनकारी तत्व एवं दुर्गुण अपने आप कम होते हैं । ऐसे धार्मिक परिवारों में सदा सब प्रकार की शांति विराजती देखी जाती है।

सूर्य के समक्ष खड़े होकर यदि गायत्री मंत्र का आठ हजार जप करें तो वह सब पापों से मुक्त हो जाता है।

-महर्षि अत्रि

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

जिन भोगों को भोगने में साधारणतः मृत्यु तुल्य कष्ट होने की संभावना थी वे गायत्री की कृपा से एक छोटा फोड़ा बनकर सामान्य कष्ट के साथ भुगत जाते हैं और अनेक जन्मों तक भुगत जाने वाली कठिन पीड़ायें हल्के-हल्के छोटे-छोटे रूप में इसी जन्म में समाप्त होकर आनंदमय भविष्य का मार्ग साफ कर देती है। इस प्रकार के कष्ट भी गायत्री माता की कृपा ही समझना चाहिए।

अपवित्र हो या पवित्र हो, चलता हो अथवा बैठा हो अथवा जिस स्थिति में भी हो, बुद्धिमान मनुष्य गायत्री का जप करता रहें। इस जप के द्वारा पापों से छुटकारा होता है।

-गायत्री तन्त्र

वेद कहता है, कि सूर्य संसार की आत्मा है। भौतिक विज्ञान इस सूत्र के एक-एक पद पर महाभाष्य रच रहा है। विश्व के समस्त तत्वज्ञ एक स्वर से घोषित करते हैं, सूर्य से बढ़ कर कोई डॉक्टर नहीं। किन्तु

हाय, अज्ञानी मनुष्य अब भी सभ्यता के नाम पर धूप का सेवन नहीं चाहते और खोये हुए स्वास्थ्य को सुधारने के लिए सदैव सूर्य से बचकर इधर-उधर टक्करें खाते फिरते हैं।

गायत्री मंत्र के जप से इस प्रकार की थरथरी उत्पन्न होती है जो शरीर के सूक्ष्म संस्थानों में व्याप्त उष्मा में इस तरह फूंक मारती है जैसे हवा से आग को प्रज्वलित किया जाता है। गायत्री मंत्र जप विश्व प्राण को आकर्षित करता है, उसे उपासक के अंतःकरण में प्रतिष्ठित करता है।

गायत्री मंत्र की साधना करते करते साधक के भीतर इस महाशक्ति का आविर्भाव हुआ अथवा नहीं यह परीक्षा किसी साधक के विचारों को देखकर की जा सकती है। जिसके अंतःकरण में गायत्री अवतीर्ण होगी उसके विचारों में परिवर्तन दिखाई पड़ेगा। उसके विचार, विवेचन, निर्णय ऐसे होंगे जो एक आत्मशक्ति संपन्न व्यक्ति के गौरव के अनुकूल हो।

ब्रह्माजी का दिया हुआ यह हथियार गायत्री मंत्र जिस दिन से मनुष्य जाति को मिला, उसी समय से उसे ज्ञान, संतोष, नैतिकता, प्रेम, सहयोग मिलने का सिलसिला चालू हो गया। यह इंसान की जिंदगी के सौभाग्य का दिन था। ब्रह्माजी ने वेदों के ज्ञान के रूप में यह विभूति दी और वही गायत्री अब युगशक्ति बनने जा रही है।

इस संसार में जितनी भी सुख - संपत्तियां हैं, उस सर्वशक्तिमान सत्ता गायत्री के हाथ में है। वहीं उनकी स्वामिनी है। जब उस शक्ति से मनुष्य अपना संबंध स्थापित कर लेता है और उसकी कृपा का अधिकारी बन जाता है तो उसे अपने इष्टदेव के अधिकार की कोई भी वस्तु प्राप्त करना कठिन नहीं होता है

याज्ञवल्क्य ऋषि का कथन है कि - सायं काल में गायत्री का पाठ करने से दिन में किये हुए पाप नष्ट हो जाते हैं। प्रातः में पाठ करने से रात्रि में किये गए पाप नष्ट हो जाते हैं। मद्य आदि पीने, अभक्ष्य खाने, अज्ञान में डूबे रहने, चोरी करने, व्यभिचार ब्रह्महत्या दुराचार आदि पापों से छुटकारा मिल जाता है। जो इसकी नित्य उपासना करता है वो सारे पापो से छूट जाता है।

जो लोग अब तक पथ भ्रष्ट रहे हैं, कुमार्ग पर चलते रहे हैं, अनेक बुराइयां कर चुके हैं, उनके लिए भी गायत्री माता का स्नेहमयी अंचल खुला हुआ है। वे अब तक की भूलो का पश्चाताप करें, आगे उन्हें न करने का व्रत लें, सन्मार्ग पर चलने को तत्पर हो तो गायत्री मंत्र की उपासना से उनके जीवन भी सत्कर्मों की अभिवृद्धि होना सुनिश्चित है। उनका भविष्य भी उज्जवल बने

जब गायत्री मंत्र से बुद्धि प्रकाशित होती है, तो हर साधारण कर्म भी दिव्य साधना बन जाता है।

गायत्री में जो तेज़ है वहीं ब्रह्मावर्चस् है। इससे उपासक तेजस्वी और ब्रह्मावर्चस्वी हो जाता है, जिसने ब्रह्मावर्चस् प्राप्त किया उसके लिए गायत्री कामधेनु गौ के समान ही उसे इसी महाशक्ति के द्वारा अपनी अभिष्ट कामना पूर्ण करने वाले वरदान मिल जाते है।

मेरे गुरुदेवने मुझे संक्षेप में बताया गायत्री मंत्र उस पारस पत्थर का नाम है, जिसको छू करके लोहा सोना बन जाया करता है और गायत्री मंत्र उस कल्पवृक्ष का नाम है, जिसके नीचे बैठकर के आदमी अपनी सारी कल्पनाएँ पूरी कर लेता है और गायत्री मंत्र उस कामधेनु का नाम है, जिसको पीकर के बूढ़ा आदमी जवान बन जाता है। गायत्री मंत्र उस ब्रह्मास्त्र का नाम है, जिसकी चोंच आदमी के व्यक्तिगत अभावों को चकनाचूर कर सकती है और उसकी मुसीबतों को और उसके मार्ग में आने वाले अवरोधों को तहस-नहस कर सकती हैं। ऐसी हैं गायत्री माँ। - युगऋषि श्रीराम शर्मा आचार्य

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

गायत्री माता की कृपा से लोगों में आत्मबल बढ़ता है और वे परमात्मा के समीप पहुँचते हैं। इससे उनको स्वाभाविक ढंग से ईश्वर की शक्तियों पर अधिकार होता है। आत्मा - परमात्मा का अंश है। गायत्री द्वारा इन दोनों में एकता हो जाती है, यह एकता ही सिद्धियों की जननी है।

"गायत्री महामंत्र का जप एवं सविता देव का ध्यान ही प्राण को सुपुष्ट, मन को सतेज, इंद्रियों को सचेतन, हृदय को पवित्र एवं जीवन को बलवान बनाता है।"

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

ऋषियों ने अपने ग्रंथों में गायत्री की मुक्त कंठ से एक स्वर से महिमा गाई है और बताया है कि आत्मा को परमात्मा बनाने वाली, नरक से स्वर्ग पहुँचाने वाली, तुच्छ को महान बनाने वाली शक्ति गायत्री ही है। प्राचीनकाल की भाँति अब भी वही मार्ग है।

ॐ ब्रह्माण्ड का बीज मंत्र हैं, source code है

गायत्री मंत्र का जप करते समय साधक

भू से अपने स्वास्थ्य को,

भुवः से अपनी मानसिक शांति को,

स्वः से अपनी आध्यात्मिक उन्नति को प्रभावित करते हैं!

इससे साधक का जप एक सचेत प्रक्रिया बन जाता है!

वह मंत्र के किसी अक्षर का उच्चारण कर रहा है तो वह उस अक्षर से जुड़ी ब्रह्मांडीय शक्ति को अपने जीवन में आमंत्रित कर रहा हैं!

कलियुग में मंत्र-जप अथवा अपने किसी इष्टदेव का जप करने से सब प्रकार की इच्छायें पूर्ण होती हैं। एकाग्र चित्त, मन और प्राण को एक करके जप करना चाहिए, इष्टदेव के नाम रूपी मंत्र का जप करते-करते समुद्र में डूब जाओ, बस तुम भवसागर से पार हो जाओगे।

उस जमाने में हवन किए बिना कोई रोटी भी नहीं खाता था। अग्निहोत्र हमारा स्वाभाविक दैनिक कृत्य है। जिस प्रकार स्नान, भजन, भोजन दैनिक कृत्य है, इसी प्रकार गायत्री उपासना और यज्ञ हमारा आध्यात्मिक नित्य कर्म है और होना ही चाहिए। - पूज्यवर की अमृतवाणी, युगऋषि श्रीराम शर्मा आचार्य

स्वामी रामकृष्ण परमहंस

मैं लोगों से कहता हूं कि लम्बी साधना करने की उतनी जरुरत नहीं है!

इस छोटी-सी गायत्री की साधना करके देखो!

गायत्री का जप करने से बड़ी-बड़ी सिद्धियाँ मिल जाती हैं!

यह मन्त्र छोटा है पर इसकी शक्ति भारी है!

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

गायत्री मंत्र गुप्त है। इसका उच्चारण निषिद्ध है। यह प्रचार वर्ण के नाम पर स्वयं को ब्राह्मण कहने वाले धर्म मंच के दिग्गजों ने अधिक किया है। विशेषकर दक्षिण भारत में यह भ्रान्ति तो सर्वाधिक है।

देवमाता

वेदमाता

विश्वमाता

जो सज्जन नियमित साधना नहीं कर सकते, किसी विधि विधान का नियमित रूप से पालन करना बन नहीं पड़ता। उनसे हमारी प्रार्थना है कि सर्वथा साधना विमुख होने की अपेक्षा वे मन ही मन (बिना होठ और जिव्हा हलाए) उंगली के पोरुओं पर संख्या की गणना करते हुए जितना हो सके गायत्री का जप कर लिया करें। इसके लिए किसी स्थान, माला, आसन आदि की आवश्यकता नहीं है।

ॐ स्तुता मया वरदा वेद माता प्रचोदयन्ता पावमानी द्विजानां। आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसं। मह्यं दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकं ॥

वेद माता गायत्री वरों की दाता है। अपने उपासक को कुमार्ग से बचाकर सुमार्ग पर लाने वाली है। आयु, स्वास्थ्य, संतान, पशु, धन, संपत्ति, कीर्ति, यश और अंततः ब्रह्म का साक्षात् कराने वाली और उससे

मिलाने वाली यही है।

ॐ

सर्वे भवन्तु सुखिनः

सभी प्राणी सुखी हों

सर्वे सन्तु निरामयाः

सभी रोगमुक्त और स्वस्थ रहें

सर्वे भद्राणि पश्यन्तुः

सभी को शुभ ही दिखाई दे, सबके साथ कल्याणे

मा कश्चिदद्दुःखभाग्भवेत्

किसी को भी कभी दुःख का भागी न होना पड़े

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

देह, मन और आत्मा-तीनों स्तरों पर शांति की कामना

गायत्री मंत्र युग निर्माण का आधार है। गायत्री को प्राणों के उत्कर्ष की साधना भी कहते है। इस उपासना से अंतरंग गतिमान होता है। उसमें छाई, मलिनता, अंधकार और अविवेक दूर भागते हैं। भावनाओं में देवत्व का विकास और कृतित्व में शुचिता व पवित्रता का समावेश होता है। जहां भावनाएं शुद्ध एवं पवित्र होगी वहां सुख-शांति की निर्झरणी प्रवाहित होती रहेगी।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

सूर्य न कभी अस्त होता है और न देवता शयन करते हैं। इसलिए रात्रि उपासना करने में कोई हर्ज नहीं। किसी को बहुत संदेह हो तो मौन, मानसिक जप तो बिना संकोच कर सकता है। मानसिक जप पर तो स्नान, स्थान जैसा भी प्रतिबन्ध नहीं है।

जिस प्रकार जड़ को सिंचने से पत्र, पल्लव, पुष्प, फ़ल आदि सभी की प्राप्ति हो जाती है, उन सब के लिए अलग-अलग प्रयत्न नहीं करना पड़ता, उसी प्रकार गायत्री साधना से अन्य सभी साधनाओं द्वारा हो सकने वाले लाभ प्राप्त हो जातें हैं।

गायत्री मंत्र के अक्षरों का गुंथन इस प्रकार हुआ है जिससे शरीर की समस्त गुह्य योग ग्रंथियां जाग्रत हो जाती हैं तथा साधक के मन में निः सन्देह शीघ्र ही दिव्य शक्तियों को पैदा कर देती है जो साधक के लिए नाना प्रकार के मंगलमय, सुंदर परिणामों को उत्पन्न करती हैं।

गायत्री सहस्त्र नैत्र वाली है, उसकी हजारों आंखें हैं, वह सर्वत्र सबकुछ देखती है। उससे कुछ भी छिपा हुआ नहीं है। ऐसी स्थिति में ईश्वरीय शक्ति को सर्वव्यापी समझकर अपने विचार और कार्य ऐसे रखना चाहिए जो दिव्य हो, उत्तम धर्ममय हो।

जो साधक नियमित रूप से ब्रह्म मुहूर्त में गायत्री मंत्र का जप करता है वह अपने अंतःकरण में धंसे हुए अज्ञानांधकार को बहिष्कृत करके ज्ञान का प्रकाश धारण करता है। ऐसी स्थिति में नये पाप करना बंद कर देता है और पुराने पापों को धीरे-धीरे भूगतने हुए निष्पाप हो जाता है।

ब्रह्म मुहूर्त में नियमित रूप से गायत्री महामंत्र का जप करने से साधक का संबंध सविता देवता से हो जाता है तथा सविता देवता की चेतना का अविरल प्रवाह साधक के अंतरंग में होने से साधक के शक्ति केंद्र जागृत हो जाते है तथा साधक की बुद्धि में प्रज्ञा का अवतरण होने लगता

गायत्री महामंत्र के जप द्वारा ऐसी चेतन शक्ति का उद्भव होता है, जो जपकर्ता के शरीर और मन में विचित्र प्रकार की हलचलें उत्पन्न करती हैं और अनंत आकाश में उड़कर विशिष्ट व्यक्तियों को, विशेष परिस्थितियों को तथा समूचे वातावरण को प्रभावित करती।

गायत्री मंत्र का वरेण्यं शब्द हमें अनिष्ट को छोड़कर श्रेष्ठ चिंतन करने, श्रेष्ठ को वरण करने की प्रेरणा देता है।

साधकों को जप के साथ-साथ नित्य गायत्री का ध्यान करना चाहिए। मेरुदंड सीधा रखकर ध्यान करना चाहिए। नैत्र बंद कर दोनों हाथ गोदी में रखकर ध्यान करना चाहिए। इस प्रकार अनुभव करना चाहिए जैसे गायत्री माता का ज्योति पिंड साधक के अंदर प्रवेश कर रहा है और साधक ब्रह्म तेज़ से झिलमिला रहा है। इससे आत्मा के ऊपर चढ़े हुए कषाय कल्मष जलकर भस्म हो रहे हैं।

गायत्री मंत्र से नाता जोड़कर जो भगवान की एक सर्वशक्तिमान सत्ता है, आप मालदार बन सकते हैं। आपकी मालदारी का कोई ठिकाना नहीं रहेगा। आप इतने संपन्न हो जाएंगे कि मैं कह नहीं सकता आपसे। आप बापा जलाराम के तरीके से संपन्न भी हो सकते है, विभीषण के तरीके से धनवान भी हो सकते हैं, सुग्रीव के तरीके से खोया हुआ राजपाट पा सकते हैं।

स्त्रियों का गायत्री मंत्र पर समान अधिकार

ऋषि परंपरा ने सदैव यह स्वीकार किया है कि गायत्री उपासना केवल पुरुषों तक सीमित नहीं है। स्त्रियाँ भी पुरुषों की भाँति गायत्री मंत्र जप, साधना और उपासना करने की पूर्ण अधिकारी हैं।

जब नारी गायत्री साधना अपनाती है तो—

उसके भीतर दिव्य गुणों का विकास होता है

परिवार में सुख-शांति और संस्कार बढ़ते हैं

आने वाली पीढ़ियाँ श्रेष्ठ बनती हैं

नारी ही समाज की संस्कार निर्माता है।

यदि नारी जागृत होगी तो परिवार, समाज और राष्ट्र का भविष्य भी उज्ज्वल होगा।

आइए — सभी मातृशक्ति को गायत्री साधना से जुड़ने के लिए प्रेरित करें।

भृगु स्मृति, महर्षि भृगु

गायत्री के 24 अक्षर साक्षात् परमात्मा के स्वरूप हैं।

ये 24 अक्षर ब्रह्मांड के 24 मूल तत्वों के प्रतीक हैं। इनका जप करने से साधक का संपूर्ण अस्तित्व ब्रह्मांडीय ऊर्जा के साथ लयबद्ध हो जाता है।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

गायत्री का मनन करने से पाप छूटते हैं, स्वर्ग प्राप्त होता है और मुक्ति मिलती है तथा चतुर्वर्ग (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) सिद्ध होते है।

- गायत्री तंत्र

ज्ञान दान से मनुष्य का सर्वांगीण, अक्षय और स्थायी लाभ होता है। ऋषियों के दिये गये ज्ञान से मनुष्य जाति आज़ तक विकास करती चली आ रही है। यदि ऋषियों ने उपकार नहीं किया होता तो मनुष्य केवल शारीरिक भोगों को भोगकर मानव- पशुओं की अवस्था में ही होता।

ज्ञान की महिमा अपार है। जो ज्ञानार्जन के लिए उत्सुक होता है, उस पर परमात्मा की महती कृपा समझनी चाहिए। ज्ञान की जिज्ञासा इस बात का प्रतीक है कि भवबंधनों से त्राण पाने का समय आ गया है।

वेदमाता गायत्री

गायत्री मंत्र का जप न्यूनतम तीन माला अर्थात् घड़ी से प्रायः पंद्रह मिनट नियमित रूप से की जाय। अधिक बन पड़े तो उत्तम। होंठ, कंठ मुख हिलते रहें या आवाज इतनी मंद हो कि दूसरे उच्चारण को सुन न सकें। जप प्रक्रिया कषाय-कल्मषों, कुसंस्कारों को धोने के लिए पूरी की जाती है।

गायत्री मंत्र और उगते सूर्य का दिव्य रहस्य

ॐ गायत्री मंत्र में "सविठुर" शब्द आता है। "सवितुर" का अर्थ है — उगता हुआ सूर्य वास्तव में गायत्री मंत्र सूर्य चेतना का मंत्र है। जो भी श्रद्धा से गायत्री मंत्र का जप करता है, वह — साकार ध्यान में माँ गायत्री का ध्यान कर सकता है निराकार ध्यान में उगते हुए सूर्य का ध्यान कर सकता है धरती पर यदि भगवान का दिव्य स्वरूप देखना हो, तो वह उगता हुआ सूर्य ही है।

सूर्य सम्पूर्ण पृथ्वी को प्रकाश, ऊर्जा और जीवन देता है। उसी प्रकार गायत्री मंत्र हमारी आत्मा को नई शक्ति, उत्साह और सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करता है। जैसे छोटा सा मोबाइल चार्जिंग से पूरे दिन चलने योग्य बन जाता है, वैसे ही हमारी आत्मा भी ॐ गायत्री मंत्र जप और सूर्य ध्यान से ऊर्जावान बनती है। दिनभर के कार्यों और चिंताओं से मन थक जाता है, ऊर्जा कम हो जाती है। ऐसे में प्रतिदिन सुबह कम से कम 15 मिनट उगते सूर्य का ध्यान करते हुए ॐ गायत्री मंत्र का जप अवश्य करें। "गायत्री मंत्र आत्मा की ऊर्जा का दिव्य स्रोत है।"

स्वामी शिवानंद ने कहा है कि गायत्री मंत्र को एक धार्मिक मंत्र के रूप में उपेक्षित नहीं किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि गायत्री मंत्र का जाप करने से व्यक्ति को ईश्वर की प्राप्ति होती है।

गायत्री मंत्र का अर्थ है "आइए हम ईश्वर और उनकी महिमा का ध्यान करें जिन्होंने ब्रह्मांड का निर्माण किया है, जो पूजा करने योग्य हैं, जो सभी पापों और अज्ञानता को दूर करने वाले हैं। वह हमारी बुद्धि को प्रबुद्ध करें"।

गायत्री मंत्र की उत्पत्ति देवी गायत्री की कृपा से ब्रह्मा जी के चारों मुखों से चार वेदों के रूप में हुई थी। शुरू में गायत्री मंत्र केवल देवताओं के लिए था, लेकिन महर्षि विश्वामित्र ने अपने कठोर तप से इसे आम लोगों तक पहुंचाया।

गायत्री मंत्र का जाप करने से व्यक्ति को मोक्ष, साहस, सुख, समृद्धि, पापों का नाश, मानसिक शांति और सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त होती है।

गायत्री महामंत्र की रचना ऐसे वैज्ञानिक आधार पर हुई है कि उसकी साधना से अपने भीतर छिपे हुए अनेक शक्ति केन्द्र खुल जाते हैं और अंतःकरण में सात्विकता की निर्झरणी बहने लगती है। विश्व व्यापी प्राण को अपनी प्रबल चुंबन शक्ति से खींचकर अंतःकरण में जमा कर देने की अद्भुत शक्ति गायत्री मंत्र में है।

रवींद्रनाथ टैगोर ने कहा कि गायत्री मंत्र एक छंद है जिसे सभी वेदों का प्रतीक माना जाता है। वे कहते हैं कि गायत्री मंत्र हमें मनुष्य की चेतन आत्मा के साथ विश्व की आवश्यक एकता को महसूस करने में मदद करता है।

गायत्री मंत्र का अर्थ है "हम पृथ्वीलोक, भुवर्लोक और स्वर्लोक में व्याप्त उस सृष्टिकर्ता प्रकाशमान परमात्मा के तेज का ध्यान करते हैं। हमारी बुद्धि को सन्मार्ग की तरफ चलने के लिए परमात्मा का तेज प्रेरित करे"।

योगानंद के अनुसार, गायत्री मंत्र की ध्वनि हमें अपने वास्तविक स्वरूप में वापस लाती है, जो स्वयं शुद्ध चेतना है। यह हमें याद दिलाता है कि हम पहले से ही पूर्ण प्राणी हैं, और हमें अपनी उच्चतम क्षमता को प्रकट करने के लिए वह सब कुछ दिया गया है जो हमें चाहिए।

गायत्री मंत्र का नियमित रुप से सात बार जप करने से व्यक्ति के आसपास नकारात्मक शक्तियाँ बिलकुल नहीं आती। इस मंत्र का जाप करने से व्यक्ति को मानसिक शांति मिलती है। धर्म शास्त्र में इस मंत्र का प्रयोग हर सफलता के लिए सिद्ध माना गया है।

गायत्री मंत्र 24 अक्षरों से मिलकर बना है। कहा जाता है कि इन 24 अक्षरों में चौबीस अवतार, चौबीस ऋषि, चौबीस शक्तियां, चौबीस सिद्धियां और चौबीस शक्ति बीज भी शामिल हैं।

स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि गायत्री मंत्र का जप करने से बड़ी-बड़ी सिद्धियाँ मिल जाती है। यह मंत्र छोटा है पर इसकी शक्ति बड़ी भारी है। उन्होंने कहा है कि गायत्री मंत्र का अवतार दुरितों को नष्ट करने और ऋत के अभिवर्धन के लिए हुआ है। उन्होंने कइयों को साधना के तौर पर गायत्री का जप बताया है।

स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि गायत्री मंत्र का अर्थ है कि हम उस सत्ता की महिमा का ध्यान करते हैं जिसने इस ब्रह्मांड का निर्माण किया है। हम कामना करते हैं कि वह हमारे मन को प्रबुद्ध कर सकती है।

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य एक भारतीय लेखक और स्वतंत्रता सेनानी थे। उन्होंने अखिल विश्व गायत्री परिवार की स्थापना की, जिसके 150 मिलियन सदस्य और दुनिया भर में 5000 केंद्र और देव संस्कृति विश्वविद्यालय हैं। उन्होंने गायत्री मंत्र के महत्व की प्रशंसा की।

आचार्य ने कहा कि गायत्री मंत्र सनातन और अनादि है। उन्होंने कहा कि गायत्री मंत्र को ब्राह्मणों की कामधेनु गौ कहा जाता है। उन्होंने कहा कि जो ब्राह्मण गायत्री को त्याग देता है वह ब्राह्मणत्व से च्युत हो जाता है।

आचार्य ने कहा कि गायत्री मंत्र की साधना करके सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा को सृष्टि निर्माण की शक्ति प्राप्त हुई।

आचार्य ने कहा कि गायत्री मंत्र की स्तुति अथर्ववेद 19-71 में की गई है, जिसमें उसे आयु, प्राण, शक्ति, कीर्ति, धन और ब्रह्मतेज प्रदान करने वाली कहा गया है।

गायत्री चालीसा

दोहा हीं श्रीं क्लीं मेधा प्रभा जीवन ज्योति प्रचण्ड ।

शांति क्रांति जागृति प्रगति रचना शक्ति अखण्ड ॥

जगत जननी मंगल करनि गायत्री सुखधाम ।

प्रणवों सावित्री स्वधा स्वाहा पूरन काम ॥

भूर्भुवः स्वः ॐ युत जननी। गायत्री नित कलिमल दहनी॥

अक्षर चौबिस परम पुनीता। इनमें बसें शास्त्र श्रुति गीता॥

शाश्वत सतोगुणी सतरूपा। सत्य सनातन सुधा अनूपा॥

हंसारूढ़ श्वेतांबर धारी। स्वर्ण कांति शुचि गगन बिहारी॥

पुस्तक पुष्प कमण्डल माला। शुभ्रवर्ण तनु नयन विशाला॥

ध्यान धरत पुलकित हिय होई। सुख उपजत दुःख दुर्मति खोई॥

कामधेनु तुम सुर तरु छाया। निराकार की अद्भुत माया॥

तुम्हरी शरण गहै जो कोई। तरै सकल संकट सों सोई॥

सरस्वती लक्ष्मी तुम काली। दिपै तुम्हारी ज्योति निराली॥

तुम्हरी महिमा पार न पावै। जो शरद शतमुख गुण गावैं॥

चार वेद की मातु पुनीता। तुम ब्रह्माणी गौरी सीता॥

महामंत्र जितने जग माहीं। कोऊ गायत्री सम नाहीं॥

सुमिरत हिय में ज्ञान प्रकासै। आलस पाप अविद्या नासै॥

सृष्टि बीज जग जननि भवानी। कालरात्रि वरदा कल्याणी॥

ब्रह्मा विष्णु रुद्र सुर जेते। तुम सों पावें सुरता तेते॥

तुम भक्तन की भक्त तुम्हारे। जननिहिं पुत्र प्राण ते प्यारे॥

महिमा अपरंपार तुम्हारी। जय जय जय त्रिपदा भयहारी॥

पूरित सकल ज्ञान विज्ञाना। तुम सम अधिक न जग में आना॥

तुमहिं जानि कछु रहै न शेषा। तुमहिं पाए कछु रहै न क्लेशा॥

जानत तुमहिं तुमहिं ह्वै जाई। पारस परसि कुधातु सुहाई॥

तुम्हरी शक्ति दिपै सब ठाई। माता तुम सब ठौर समाई॥

ग्रह नक्षत्र ब्रह्माण्ड घनेरे। सब गतिवान तुम्हारे प्रेरे॥

सकल सृष्टि की प्राण विधाता। पालक पोषक नाशक त्राता॥

मातेश्वरी दया व्रत धारी। तुम सन तरे पातकी भारी॥

जापर कृपा तुम्हारी होई। तापर कृपा करें सब कोई॥

मंद बुद्धि ते बुद्धि बल पावैं। रोगी रोग रहित ह्वै जावें॥

दारिद मिटै कटै सब पीरा। नाशै दुःख हरै भव भीरा॥

ग्रह क्लेश चित चिन्ता भारी। नासै गायत्री भय हारी॥

सन्तति हीन सुसन्तति पावैं। सुख संपत्ति युत मोद मनावैं॥

भूत पिशाच सब भय खावें। यम के दूत निकट नहिं आवें॥

जो सधवा सुमिरें चित लाई। अछत सुहाग सदा सुखदाई॥

घर वर सुखप्रद लहैं कुमारी। विधवा रहें सत्य व्रत धारी॥

जयति जयति जगदंब भवानी। तुम सम और दयालु न दानी॥

जो सद्गुरू सों दीक्षा पावें। सो साधन को सफल बनावें॥

सुमिरन करें सुरुचि बड़भागी। लहैं मनोरथ गृही विरागी॥

अष्ट सिद्धि नवनिधि की दाता। सब समर्थ गायत्री माता॥

ऋषि मुनि यती तपस्वी योगी। आरत अर्थी चिन्तित भोगी॥

जो जो शरण तुम्हारी आवें। सो सो मन वांछित फल पावें॥

बल बुद्धि विद्या शील स्वभाऊ। धन वैभव यश तेज उछाऊ॥

सकल बढ़ें उपजें सुख नाना। जो यह पाठ करै धरि ध्याना॥

दो सौ पंद्रहवाँ अध्याय

संध्या-विधि

अग्निदेव कहते हैं— वसिष्ठ! जो पुरुष ॐकारको जानता है, वह योगी और विष्णुस्वरूप है। इसलिये सम्पूर्ण मन्त्रोंके सारस्वरूप और सब कुछ देनेवाले ॐकारका अभ्यास करना चाहिये। समस्त मन्त्रोंके प्रयोगमें ॐकारका सर्वप्रथम स्मरण किया जाता है। जो कर्म उससे युक्त है, वही पूर्ण है। उससे विहीन कर्म पूर्ण नहीं है। आदिमें ॐकारसे युक्त ('भूः भुवः स्वः'—ये) तीन शाश्वत महाव्याहृतियों एवं ('तत्सवितुर्वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात्' इस) तीन पदोंसे युक्त गायत्रीको ब्रह्मका (वेद अथवा ब्रह्माका) मुख जानना चाहिये। जो मनुष्य नित्य तीन वर्षोंतक आलस्यरहित होकर गायत्रीका जप करता है, वह वायुभूत और आकाशस्वरूप होकर परब्रह्मको प्राप्त होता है। एकाक्षर ॐकार ही परब्रह्म है और प्राणायाम ही परम तप है। गायत्री-मन्त्रसे श्रेष्ठ कुछ भी नहीं है। मौन रहनेसे सत्यभाषण करना ही श्रेष्ठ है*॥ १—५ ॥

गायत्रीकी सात आवृत्ति पापोंका हरण करनेवाली है, दस आवृत्तियोंसे वह जपकर्ताको स्वर्गकी प्राप्ति कराती है और बीस आवृत्ति करनेपर तो स्वयं सावित्री देवी जप करनेवालेको ईश्वरलोकमें ले जाती है। साधक गायत्रीका एक सौ आठ बार जप करके संसार-सागरसे तर जाता है।

* एकाक्षरं परं ब्रह्म प्राणायामः परं तपः। सावित्र्यास्तु परं नास्ति मौनात् सत्यं विशिष्यते॥ (२१५।५)

दोहा यह चालीसा भक्तियुक्त पाठ करें जो कोय।

तापर कृपा प्रसन्नता गायत्री की होय॥

रूद्र-मन्त्रोंके जप तथा कूष्माण्ड-मन्त्रोंके जपसे गायत्री-मन्त्रका जप श्रेष्ठ है। गायत्रीसे श्रेष्ठ कोई भी जप करनेयोग्य मन्त्र नहीं है तथा व्याहृति-होमके समान कोई होम नहीं है। गायत्रीके एक चरण, आधा चरण, सम्पूर्ण ऋचा अथवा आधी ऋचाका भी जप करनेमात्रसे गायत्री देवी साधकको ब्रह्महत्या, सुरापान, सुवर्णकी चोरी एवं गुरुपत्नी-गमन आदि महापातकोंसे मुक्त कर देती है॥ ६—९ ॥

कोई भी पाप करनेपर उसके प्रायश्चित्तस्वरूप तिलोंका हवन और गायत्रीका जप बताया गया है। उपवासपूर्वक एक सहस्र गायत्री-मन्त्रका जप करनेवाला अपने पापोंको नष्ट कर देता है। गो-वध, पितृवध, मातृवध, ब्रह्महत्या अथवा गुरुपत्नीगमन करनेवाला, ब्राह्मणकी जीविकाका अपहरण करनेवाला, सुवर्णकी चोरी करनेवाला और सुरापान करनेवाला महापातकी भी गायत्रीका एक लाख जप

करनेसे शुद्ध हो जाता है। अथवा स्नान करके जलके भीतर गायत्रीका सौ बार जप करे। तदनन्तर गायत्रीसे अभिमन्त्रित जलके सौ आचमन करे। इससे भी मनुष्य पापरहित हो जाता है। गायत्रीका सौ बार जप करनेपर वह समस्त पापोंका उपशमन करनेवाली मानी गयी है और एक सहस्र जप करनेपर उपपातकोंका भी नाश करती है। एक करोड़ जप करनेपर गायत्री देवी अभीष्ट फल प्रदान करती है। जपकर्ता देवत्व और देवराजत्वको भी प्राप्त कर लेता है ॥ १०—१३$\frac{१}{२}$ ॥

आदिमें ॐकार, तदनन्तर 'भूर्भुवः स्वः' का उच्चारण करना चाहिये। उसके बाद गायत्री-मन्त्रका एवं अन्तमें पुनः ॐकारका प्रयोग करना चाहिये। जपमें मन्त्रका यही स्वरूप बताया गया है१। गायत्री-मन्त्रके विश्वामित्र ऋषि, गायत्री छन्द और सविता देवता हैं। उपनयन, जप एवं होममें इनका विनियोग करना चाहिये२। गायत्री-मन्त्रके चौबीस अक्षरोंके अधिष्ठातृदेवता क्रमशः ये हैं—अग्नि, वायु, रवि, विद्युत्, यम, जलपति, गुरु, पर्जन्य, इन्द्र, गन्धर्व, पूषा, मित्र, वरुण, त्वष्टा, वसुगण, मरुद्गण, चन्द्रमा, अङ्गिरा, विश्वेदेव, अश्विनीकुमार, प्रजापतिसहित समस्त देवगण, रुद्र, ब्रह्मा और विष्णु। गायत्री-जपके समय उपर्युक्त देवताओंका उच्चारण किया जाय तो वे जपकर्ताके पापोंका विनाश करते हैं॥ १४—१८$\frac{१}{२}$ ॥

गायत्री-मन्त्रके एक-एक अक्षरका अपने निम्नलिखित अङ्गोंमें क्रमशः न्यास करे। पैरोंके दोनों अङ्गुष्ठ, गुल्फद्वय, नलक (दोनों पिण्डलियाँ), घुटने, दोनों जाँघें, उपस्थ, वृषण, कटिभाग, नाभि, उदर, स्तनमण्डल, हृदय, ग्रीवा, मुख (अधरोष्ठ), तालु, नासिका, नेत्रद्वय, भ्रूमध्य, ललाट, पूर्व आनन (उत्तरोष्ठ), दक्षिण पार्श्व, उत्तर पार्श्व, सिर और सम्पूर्ण मुखमण्डल। गायत्रीके चौबीस अक्षरोंके वर्ण क्रमशः इस प्रकार हैं—पीत, श्याम, कपिल, मरकतमणिसदृश, अग्नितुल्य, रूक्मसदृश, विद्युत्प्रभ, धूम्र, कृष्ण, रक्त, गौर, इन्द्रनीलमणिसदृश, स्फटिकमणितुल्य, स्वर्णिम, पाण्डु, पुखराजतुल्य, अखिलद्युति, हेमाभधूम्र, रक्तनील, रक्तकृष्ण, सुवर्णाभ, शुक्ल, कृष्ण और पलाशवर्ण। गायत्री ध्यान करनेपर पापोंका अपहरण करती और हवन करनेपर सम्पूर्ण अभीष्ट कामनाओंको प्रदान करती है। गायत्री-मन्त्रसे तिलोंका होम सम्पूर्ण पापोंका विनाश करनेवाला है। शान्तिकी इच्छा रखनेवाला जौका और दीर्घायु चाहनेवाला घृतका हवन

१. ॐकारं पूर्वमुच्चार्य भूर्भुवः स्वस्तथैव च ॥

गायत्रीं प्रपवच्छान्ते जपे चैव मुदाहृतम्॥ (२१५।१४-१५)

—इसके अनुसार जपनीय मन्त्रका पाठ यों होगा—'ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ।

२. गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवताग्निर्मुखमुपनयने जपे होमे वा विनियोगः।

इन्हें भी देखें : सूर्यः, सूरः, अर्यमा, आदित्यः, द्वादशात्मा, दिवाकरः, भास्करः, अहस्करः, वध्रः, प्रभाकरः, विभाकरः, भास्वान्, विवस्वान्, सप्ताश्वः, हरिदश्वः, उष्णरश्मिः, विवर्त्तनः, अर्कः, मार्त्तण्डः, मिहिरः, अरुणः, वृषा, द्युमणिः, तरणिः, मित्रः, चित्रभानुः, विरोचन्, विभावसुः, ग्रहपतिः, त्विषाम्पतिः, अहःपतिः, भानुः, हंसः, सहस्त्रांशुः, तपनः, सविता, रविः, शूरः, भगः, वृध्नः, पद्मिनीवल्लभः, हरिः, दिनमणिः, चण्डांशुः, सप्तसप्तिः, अंशुमाली, काश्यपेयः, खगः, भानुमान्, लोकलोचनः, पद्मबन्धुः, ज्योतिष्मान्, अव्यथः, तापनः, चित्ररथः, खमणिः, दिवामणिः, गभस्तिहस्तः, हेलिः, पतंगः, अर्च्चिः, दिनप्रणीः, वेदोदयः, कालकृतः, ग्रहराजः, तमोनुदः, रसाधारः, प्रतिदिवा, ज्योतिःपीठः, इनः, कर्मसाक्षी, जगच्चक्षुः, त्रयीतपः, प्रद्योतनः, खद्योत, लोकबान्धवः, पद्मिनीकान्तः, अंशुहस्तः, पद्मपाणिः, हिरण्यरेताः, पीत, अद्रिः, अगः, हरिवाहनः, अम्बरीषः, धामनिधिः, हिमारातिः, गोपतिः, कुञ्जारः, प्लवगः, सूनुः, तमोपहः, गभस्तिः, सवित्रः, पूषा, विश्वपा, दिवसकरः, दिनकृत्, दिनपतिः, द्युपतिः, दिवामणिः, नभोमणिः, खमणिः, वियन्मणिः, तिमिररिपुः, ध्वान्तारातिः, तमोनुदः, तमोपहः, भाकोषः, तेजःपुञ्जः, भानेमिः, खखोल्कः, खद्योतनः, विरोचनः, नभश्चक्षूः, लोकचक्षूः, जगत्साक्षी, ग्रहराजः, तपताम्पतिः, सहस्त्रकिरणः, किरणमाली, मरीचिमाली, अंशुधरः, किरणः, अंशुभर्त्ता, अंशुवाणः, चण्डकिरणः, धर्मांशुः, तीक्ष्णांशुः, खरांशुः, चण्डरश्मिः, चण्डमरीचिः, चण्डदीधितिः, अशीतमरीचिः, अशीतकरः, शुभरश्मिः, प्रतिभावान्, विभावान्, विभावसुः, पचतः, पचेलिमः, शुष्णः, गगनाध्वगः, गणध्वजः, खचरः, गगनविहारी, पद्मगर्भः, पद्मासनः, सदागतिः, हरिदश्वः, मणिमान्, जीवितेशः, मुरोत्तमः, काश्यपी, मृताण्डः, द्वादशात्मकः, कामः, कालचक्रः, कौशिकः, चित्ररथः, शीघ्रगः, सप्तसप्तिः,

गायत्री मंत्र लेखन गायत्री मंत्र को बार-बार लिखने की

प्रथा है, जिसे हिंदू धर्म में ध्यान और भक्ति का एक

शक्तिशाली रूप माना जाता है। इस अभ्यास में मंत्र को

कागज़ पर या किसी समर्पित पत्रिका में लिखना शामिल है,

अक्सर दोहराव की एक विशिष्ट संख्या तक पहुँचने के

इरादे से, जैसे कि 108। मंत्र लिखने का कार्य मन को केंद्रित

करने, एकाग्रता बढ़ाने और पवित्र मंत्र के आध्यात्मिक

कंपन को मजबूत करने में मदद करता है। इसे मन और आत्मा

को शुद्ध करने, आंतरिक शांति को बढ़ावा देने और

दिव्य आशीर्वाद प्राप्त करने का एक शक्तिशाली
तरीका माना जाता है। गायत्री मंत्र लेखन में
शामिल होने से व्यक्ति का ईश्वर से जुड़ाव गहरा होता है,
आध्यात्मिक विकास को बढ़ावा मिलता है और
व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक ऊर्जाएँ प्रकट होती हैं।

गायत्री मंत्र- 'ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्', को सबसे प्रभावी मंत्र माना जाता है।
मान्यता है कि इसके जाप से सभी प्रकार के कार्यों में सिद्धि
प्राप्त होती है। शास्त्रों में इस बात का उल्लेख मिलता है गायत्री
वेदमाता हैं और समस्त पापों का नाश करने की शक्ति उनमें
समाहित है। गायत्री मंत्र को सबसे पहला मंत्र भी कहा जाता है।
गायत्री सभी वेदों का सार है, प्रत्यगात्मा और
ब्रह्म की एकता का प्रतीक है। गायत्री सर्वोच्च सत्ता के दिव्य
गुणों जैसे सर्वव्यापकता, अलौकिक चमक, परम आनंद की सघनता,
सर्वज्ञता और सर्वशक्तिमानता का प्रतीक है। गायत्री मंत्र का
ॐ भूर्भुवः स्वः
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।
गायत्री मंत्र- 'ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्', को सबसे प्रभावी मंत्र माना जाता है।
मान्यता है कि इसके जाप से सभी प्रकार के कार्यों में सिद्धि
प्राप्त होती है। शास्त्रों में इस बात का उल्लेख मिलता है गायत्री
वेदमाता हैं और समस्त पापों का नाश करने की शक्ति उनमें

समाहित है। गायत्री मंत्र को सबसे पहला मंत्र भी कहा जाता है।

गायत्री मंत्र का महत्व

गायत्री भगवान का नारी रूप है। भगवान की माता के रूप में उपासना करने से दर्पण के प्रतिबिम्ब एवं कुएं की आवाज की तरह वे भी हमारे लिए उसी प्रकार प्रत्युत्तर देते हैं। गायत्री को भूलोक की कामधेनु कहा गया है। गायत्री को सुधा कहा गया है क्योंकि जन्म-मृत्यु के चक्र से छुड़ाकर सच्चा अमृत प्रदान करने की शक्ति से वह परिपूर्ण है। गायत्री को पारसमणि कहा गया है क्योंकि उसके स्पर्श से लोहे के समान कलुषित अन्तःकरणों का शुद्ध स्वर्ण जैसा महत्वपूर्ण परिवर्तन हो जाता है। गायत्री को कल्पवृक्ष कहा गया है क्योंकि इसकी छाया में बैठकर मनुष्य उन सब कामनाओं को पूर्ण कर सकता है जो उसके लिए उचित एवं आवश्यक है। श्रद्धापूर्वक गायत्री माता का आंचल पकड़ने का परिणाम सदा कल्याणपरक होता है। गायत्री को ब्रह्मास्त्र कहा गया है क्योंकि कभी किसी की गायत्री साधना निष्फल नहीं जाती। इसका प्रयोग कभी भी व्यर्थ नहीं होता है।

सभी धर्मग्रंथों में मिलता है उल्लेख

गायत्री सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वोत्तम मंत्र है। जो कार्य संसार में किसी अन्य मंत्र से हो सकता है, गायत्री से भी अवश्य हो सकता है। इस साधना में कोई भूल रहने पर भी किसी का अनिष्ट नहीं होता, इससे सरल, श्रम साध्य और शीघ्र फलदायिनी साधना

दूसरी नहीं है। समस्त धर्म ग्रंथों में गायत्री की महिमा एक स्वर में कही गयी है। अथर्ववेद में गायत्री को आयु, विद्या, संतान, कीर्ति, धन और ब्रह्मतेज प्रदान करने वाली कहा गया है। विश्वामित्र ऋषि जी ने कहा है, "गायत्री के समान चारों वेदों में कोई मंत्र नहीं है। संपूर्ण वेद, यज्ञ, दान, तप गायत्री की एक कला के समान भी नहीं हैं।"

गायत्री मंत्र से होने वाले लाभ

गायत्री मंत्र के 24 अक्षरों में अनेक ज्ञान-विज्ञान छिपे हुए हैं। गायत्री साधना द्वारा आत्मा का शुद्ध स्वरूप प्रकट होता है और अनेक ऋद्धि-सिद्धियां परिलक्षित होने लगती हैं। गायत्री उपासना से तुरंत आत्मबल बढ़ता है। गायत्री साधना एक बहुमूल्य दिव्य संपत्ति है। इस संपत्ति को एकत्रित करके साधक उसके बदले में सांसारिक सुख एवं आत्मिक आनन्द भली प्रकार प्राप्त कर सकता है। गायत्री के 24 अक्षरों का गुंथन ऐसा विचित्र एवं रहस्यमय है कि उनके उच्चारण मात्र से जिव्हा, कण्ठ, तालु एवं मूर्धा में अवस्थित नाड़ी तंतुओं का एक अद्भुत क्रम में संचालन होता है। इस प्रकार गायत्री के जप से अनायास ही एक महत्वपूर्ण योग साधना होने लगती है और उन गुप्त शक्ति केंद्रों के जागरण से आश्चर्यजनक लाभ मिलने लगता है।

गायत्री मंत्र को हिंदू धर्म में सबसे शक्तिशाली और सार्वभौमिक रूप

से महत्वपूर्ण मंत्रों में से एक माना जाता है। यह

एक वैदिक भजन है जो सूर्य की दिव्य ऊर्जा का

आह्वान करता है, जो ज्ञान, रोशनी और सृष्टि के

आदिम स्रोत से जुड़ा है। यह मंत्र ऋग्वेद में

पाया जाता है।

7. गायत्री मंत्र का स्मरण

श्लोक:

"गायत्र्या: परमं तत्त्वं जप: शुद्धिं प्रयच्छति।

न ततोऽन्य: परो धर्म: कलौ गायत्र्यजपात्पर:॥"

हिन्दी अर्थ:

गायत्री मंत्र का जप महान तत्त्व है, जो शुद्धि प्रदान करता है। कलियुग में

इससे बढ़कर कोई दूसरा धर्म नहीं है।

8. भोजन और शुद्धि का नियम

श्लोक:

"कलौ पवित्रं भोजनं शुद्धिं दत्तं विवर्जयेत्।

भोजनं भावसम्पन्नं देवपूजासमं स्मृतम्॥"

हिन्दी अर्थ:

कलियुग में मन से किया गया पवित्र भोजन, श्रद्धा के साथ ग्रहण किया हुआ

भोजन - देवपूजा के समान पुण्यकारी माना गया है।

🌸 विस्तृत अर्थ (महर्षि वेदव्यास दृष्टि से)

👉 "ॐ" — ब्रह्म का बीजस्वरूप।

👉 "भूः" — पृथ्वी लोक, स्थूल जगत।

👉 "भुवः" — अंतरिक्ष लोक, प्राण जगत।

👉 "स्वः" — स्वर्ग लोक, चैतन्य/मन लोक।

👉 "तत्" — वह परम ब्रह्म, सर्वव्यापी प्रकाश।

👉 "सवितुः" — सविता अर्थात् सूर्य स्वरूप परमात्मा।

👉 "वरेण्यम्" — जो वरणीय है, सबसे उत्तम।

👉 "भर्गः" — पाप नाशक तेजस्वरूप।

👉 "देवस्य" — देव स्वरूप उस दिव्यता का।

👉 "धीमहि" — हम ध्यान करते हैं।

👉 "धियः" — बुद्धि, विवेक शक्ति।

👉 "यः नः प्रचोदयात" — जो हमारी बुद्धि को प्रेरित करे।

🌟 भावार्थ: हम उस परम प्रकाशस्वरूप देवता का ध्यान करते हैं, जो हमारे बुद्धि तत्व को पवित्र और जाग्रत कर सन्मार्ग की ओर प्रेरित करे।

समर्थ साधना) (१५

गायत्री का तत्त्वदर्शन और भौतिक उपलब्धियाँ

गायत्री उपासना का सहज स्वरूप है—व्याहृतियों वाली त्रिपदा गायत्री का जप । 'ॐ भूर्भुवः स्वः'-यह शीर्ष भाग है, जिसका तात्पर्य है कि आकाश, पाताल और धरातल के रूप में जाने जाने वाले तीनों लोकों में उस दिव्य सत्ता को समाविष्ट अनुभव करना । जिस प्रकार न्यायाधीश की, पुलिस अधीक्षक की उपस्थिति में अपराध करने का कोई साहस नहीं करता, उसी प्रकार सर्वदा, सर्वव्यापी, न्यायकारी सत्ता की उपस्थिति अपने सब ओर सदा सर्वदा अनुभव करना और किसी भी स्तर की अनीति का आचरण न होने देना । '"ॐ" अर्थात् परमात्मा । उसे विराट् विश्व ब्रह्माण्ड के रूप में व्यापक भी समझा जा सकता है । यदि उसे आत्म सत्ता में समाविष्ट भर देखना हो, तो स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर, कारण शरीर में परमात्मा सत्ता की उपस्थिति अनुभव करनी पड़ती है और देखना पड़ता है कि इन तीनों ही क्षेत्रों में कहीं ऐसी मलीनता न जुटने पाए, जिसमें प्रवेश करते हुए परमात्मा सत्ता को संकोच हो । साथ ही इन्हें इतना

स्वस्थ, निर्मल एवं दिव्यताओं से सुसंपन्न रखा जाए कि जिस प्रकार खिले गुलाब पर भौंरे अनायास ही आ जाते हैं, उसी प्रकार तीनों शरीरों में परमात्मा की उपस्थिति दीख पड़े और उनकी सहज सदाशयता की सुगंधि से समीपवर्ती समूचा वातावरण सुगंधित हो उठे ।

गायत्री मंत्र का अर्थ सरल और सर्वविदित है—सवितुः- तेजस्वी । वरेण्यं-वरण करना, अपनाना । भर्गो- अनौचित्य को तेजस्विता के आधार पर दूर हटा फेंकना । देवस्य-देवत्व की पक्षधर विभूतियों को । धीमहि अर्थात् धारण करना । अंत में ईश्वर से प्रार्थना की गई है कि इन विशेषताओं से संपन्न परमेश्वर हम सबकी बुद्धियों को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करे, सद्बुद्धि का अनुदान प्रदान करे । कहना न होगा कि ऐसी सद्बुद्धि प्राप्त व्यक्ति, जिसकी सद्भावना जीवंत हो, वह अपने दृष्टिकोण में स्वर्ग जैसी मनोमय कोश के साथ आत्मानुभव होता है विज्ञानमय कोश से आत्म-

लाभ का सम्बन्ध है और आनन्दमय कोश में आत्म-कल्याण सन्निहित हैं।

दश भुजी गायत्री की पाँच भुजायें सूक्ष्म और पाँच स्थूल हैं।

निष्काम उपासना करने वाले माता के सूक्ष्म हाथों से आशीर्वाद पाते

हैं और सकाम उपासकों को स्थूल हाथों से प्रसाद मिलता है असंख्याओं

व्यक्ति ऐसे हैं जिन्होंने माता की कृपा से सांसारिक सम्पत्तियाँ प्राप्त

की हैं और अपनी दुर्गम कठिनाइयों से त्राण पाया है। स्वास्थ्य, धन,

विद्या, चतुरता और सहयोग यह पांच सांसारिक सम्पत्तियाँ पञ्चमुखी

माता की स्थूल भुजाओं से मिलती हैं।

ऐसे कितने ही अनुभव हमारे सामने हैं जिनमें लोगों ने साधा-

रण गायत्री साधना द्वारा आशाजनक सांसारिक सफलतायें प्राप्त की

हैं। जिनके घर में रोग घुस रहा था बीमारी की पीड़ा सहते-सहते

और डॉक्टरों का घर भरते-भरते जो कातर हो रहे थे. उन्होंने रोग

मुक्ति के वरदान पाये। क्षय सरीखे प्राण घातक रोगों की मृत्यु शय्या

पर से उठकर खड़े हो गये। कइयों को जन्म जात पैतृक रोगों तक

से छुटकारा मिला। कितने ही बेकार, दरिद्र और अयोग्य व्यक्ति

अच्छी जीविका के अधिकारी बन गये। साधनहीन और अविकसित

लोग चतुर, बुद्धिमान, कलाकार, शिल्पी गुणवान्, प्रतिभावान्, सर्वप्रिय नेता और यशस्वी बन गये। जिनको सब ओर से तिरस्कार, अपमान, द्वेष, संघर्ष और असहयोग ही मिलता था उनको घर बाहर सर्वत्र प्रेम सहयोग, सद्भाव तथा मधुर व्यवहार प्राप्त होने लगा।

ऐसे अगणित चमत्कारी लाभ उठाने वाले लोगों से हम स्वयं परिचित है। मुकदमा, आक्रमण, बन्धन, भय, आशंका, विरोध, परीक्षा, बीमारी, दरिद्रता, भूतबाधा, सन्तति-कष्ट, व्यसन, दुर्गण आदि कुचक्रों के त्रासदायक चंगुल से छूटकर अनेक व्यक्तियों ने सन्तोष की साँस ली है।

गायत्री मन्त्र के अक्षरों में सन्निहित दिव्य सन्देश

१. तत् - ईश्वर की सत्ता सर्वोपरि है, उसे पहचानें।

२. स - संकटों में भी धैर्य न खोएं, साहस बनाए रखें।

३. वि - विवेक से काम लें, अंधानुकरण न करें।

४. तु - तुच्छता छोड़ें, महानता का मार्ग अपनाएं।

५. व - वाणी में मधुरता और व्यवहार में शालीनता लाएं।

६. रे - रेखांकित करें अपने दोषों को और उन्हें सुधारें।

७. णि - निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर रहें।

८. यं - यश और कीर्ति सत्कर्मों से ही संभव है।

९. भ - भय का त्याग कर निर्भय बनें।

१०. र्गो - गौरवमयी जीवन जीने का संकल्प लें।

११. दे - देवत्व को अपने भीतर जगाएं।

१२. व - वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना रखें।

१३. स्य - संयम और नियम का पालन करें।

१४. धी - धीरता और स्थिरता को जीवन में उतारें।

१५. म - ममता और करुणा का भाव रखें।

१६. हि - हिंसा का त्याग कर अहिंसा अपनाएं।

१७. धि - ध्येय के प्रति निष्ठावान रहें।

१८. यो - योग और साधना को जीवन का अंग बनाएं।

१९. यो - योग्य बनें और दूसरों को भी योग्य बनाएं।

२०. नः - नम्रता और विनयशीलता का गुण सीखें।

२१. प्र - पुरुषार्थ करें, भाग्य के भरोसे न बैठें।

२२. चो - चोरी, बेईमानी और छल-कपट से दूर रहें।

२३. द - दान और सेवा भाव को प्राथमिकता दें।

२४. यात् - यात्रा जीवन की सफल हो, ऐसा पुरुषार्थ करें।

काठिया बाबा की गायत्री साधना

कुछ समय पहले वृन्दावन में एक परमसिद्ध महात्मा थे । नाम तो उनका था—महात्मा रामदास, परन्तु वे लकड़ी की लैंगोटी धारण करते थे । इसी कारण काठिया बाबा के नाम से ही प्रसिद्ध थे ।

काठिया बाबा ने अपनी साधना की सफलता का वर्णन इन शब्दों में किया है— 'विद्याध्यन के उपरान्त मैं गुरु के पास से वापस अपने घर आया तब सर्वप्रथम मुझे गायत्री मन्त्र सिद्ध करने की इच्छा हुई ।

हमारे बगीचे के पास एक बड़ा वट वृक्ष था । उसी के नीचे शापोद्धार कवच आदि विधि-विधान के साथ गायत्री मन्त्र का जप, अनुष्ठान आरम्भ किया । विधि की जानकारी मुझे गुरु—गृह में दी जा चुकी थी ।

७५ हजार मन्त्र जप कर चुकने पर आकाशवाणी हुई—'बेटा ! शेष जप ज्वालामुखी पर जाकर कर, तुझे सिद्धि मिलेगी ।'

आकाशवाणी से स्वाभाविक ही मुझ में उल्लास उमड़ा । आनन्दित भाव से मैं ज्वालामुखी की ओर चला, साथ में मेरा समवय भतीजा था । हमारे यहाँ से ज्वालामुखी ३५-४० मील दूर है । मार्ग में एक तेजपुंज महात्मा मिले । उनके प्रति मेरे मन में आकर्षण हुआ और मैंने उनसे वैराग्य की दीक्षा ली । दीक्षा लेने से मेरे भतीजे ने मना किया, मैंने उसकी नहीं मानी । तब वह लौटकर गाँव गया और पिताजी को ले आया ।

मुझे संन्यासी बने देख पिताजी दुःखी हुए, वे मुझे पुनः संसारी बनने का आग्रह करने लगे । डराया भी, जब उनके सभी प्रयास निष्फल हो गये तब वे मेरे गुरुदेव से कहकर मुझे अपने गाँव ले गये । वहाँ वट-वृक्ष के नीचे मैंने आसन लगाया व साधना शुरू की । रात्रि में आकाश-मण्डल को भेदकर गायत्री देवी प्रकट हुईं और बोलीं—'वत्स ! मैं तुझ पर प्रसन्न हूँ वर माँग ।' मैंने साष्टांग प्रणाम कर कहा— 'माँ ! मैं तो वैराग्य ले चुका हूँ, अब कोई कामना नहीं । बस आप प्रसन्न रहें यही विनम्र प्रार्थना है ।' एवमस्तु कहकर देवी अन्तर्ध्यान हो गईं ।

गायत्री की सिद्धि प्राप्त कर लेने पर काठिया बाबा को और कुछ पाना बाकी न रहा । वे आप्त काम हो गये, उन्हें दूर दृष्टि प्राप्त हो गई थी । वे कोई भी बात जान लेते थे, शिष्यों पर आये संकटों को दूर कर देते थे । उनकी वाणी-सिद्धि विलक्षण थी ।

३४ गायत्री के प्रत्यक्ष चमत्कार

महापुरुष—सन्त की तरह स्वयं को छुपाने की यह शक्ति बाबा में अनुपम थी । द्रव्य का अभाव उनके यहाँ कभी नहीं रहा । उनकी लकड़ी की लैंगोटी को देखकर सब लोग आश्चर्य में डूब जाते थे । सेवक लोग समझते थे कि बाबाजी ने सोने की मुहरें इकट्ठी की हैं, उन्हें छुपाने के लिए यह लकड़ी की लैंगोटी बनवाई है । लोभ—लालच में पड़ कर उनके सेवकों ने उन्हें तीन बार दो–दो तोला जहर दिया, तब भी उन पर विशेष असर इस विष का नहीं हुआ । तब लोगों ने उनकी शक्ति का अनुभव किया । उनका आत्मतेज प्रचण्ड था, उनके सामने पहुँचाने वाला उनसे अभिभूत हो जाता था ।

उघड़ जोशी का अतीन्द्रिय ज्ञान

श्री दयाशंकर गिरजाशंकर जोशी चौरासी भट्ट एक सिद्ध पुरुष हो गये हैं । लोग उन्हें चाँदौद क्षेत्र के गुप्त योगेश्वर का उघड़ जोशी महाराज कहते थे ।

उन्होंने एक बार आत्मानुभूति बताई—'मैं तो बचपन से गायत्री उपासना करता हूँ । प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में एक लोटा और धोती लेकर नर्मदा नदी में जाकर स्नान करना, वहाँ एक बड़े पेड़ के नीचे पूर्वाभिमुख बैठकर, एकाग्रचित्त से गायत्री मन्त्र का जप करना, यह मेरा क्रम था । शाम को घर आकर एक बार भोजन लेकर फिर शंकर जी की आराधना करता ।

मोक्ष की अभिलाषा से मैं समर्थ गुरु की खोज में था । माँ गायत्री की उपासना के प्रभाव से एक दिन एक महात्मा का दर्शन—लाभ हुआ । उनकी सेवा में लग गया । सेवा करते—करते एक दिन मध्य रात्रि में मुझ पर प्रसन्न होकर उन्होंने मेरी नाभि में हाथ से जोरदार धक्का लगाया । उसी क्षण मेरी कुण्डलिनी जागृत हुई और मुझे आत्म—साक्षात्कार हो गया । सारे जगत् को मैं ब्रह्मरूप में देखने लगा । स्थावर—जंगम रूप में मुझे चैतन्य स्वरूप दिखने लगा, उसी दिन से मुझे रात्रि में समाधि होने लगी ।

मैं जिस मनुष्य को देखता उसके भूत, भविष्य, वर्तमान को जानने लगा, किन्तु किसी को कहता नहीं, आवश्यकतानुसार ही उत्तर देता । मेरे अन्दर ही सभी देवी—देवताओं का निवास है । मैं तो 'कर्तुम्—अकर्तुम् अन्यथा कर्तुम्' रूप हूँ । जो होनेवाला है और जो नहीं होने वाला है दोनों को ही बदल सकता हूँ ।

गायत्री के प्रत्यक्ष चमत्कार ३५

ॐ भूर्भुवःस्वः।

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्यधीमहि ।

धियोयोनःप्रचोदयात् ॥

जो सविता हमारे बुद्धि को 'तत्' यानी 'उस'

(परमात्मा) के प्रति प्रेरित करता है, उस श्रेष्ठ 'भर्ग'

नामक तेज की हम उपासना करते हैं ।

ऊपर की व्याख्या का सार इस प्रकार है :—

हम उस सर्वोत्कृष्ट महान् देवता के प्रकाश का ध्यान

करते हैं। वह हमें यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रतिभा

का विकासे करे ॥

(६) वैदिक शास्त्र–आयुर्वेद सम्बन्धी कितनी ही चमत्कारी बातें बतलाते थे । वे कहते कि नक्षत्रों के साथ वनस्पतियों का घनिष्ठ सम्बन्ध है । अमुक नक्षत्र में अमुक औषधि–वनस्पति को अमुक विधि के साथ लिया जाय तो अमुक प्रकार के रोग वाले मनुष्य को निश्चित रोग से मुक्ति मिलेगी । इसी तरह अमुक–अमुक औषधियों से अमुक–अमुक रोग निश्चित रूप से ठीक हो जाता है ।

विद्या विभूषण मुकुटराम जी

बड़ौदा राज्य के मंजुसर गाँव के निवासी श्री मुकुटराम जी महाराज ने गायत्री की उपासना से परम सिद्धि प्राप्त की थी । महाराज जी अपने बचपन में ब्रह्ममुहूर्त में उठकर ठण्डे पानी से स्नान करके गायत्री का जाप करने बैठ जाते थे । चातुर्मास में रात के ३-४ बजे तक एक ही आसन से जप करते थे ।

उन्होंने कितने ही पुरश्चरण किये और मरने तक जप और पुरश्चरण का क्रम चलता ही रहा । इस प्रकार की गायत्री साधना से उनको ये अलौकिक सिद्धियाँ प्राप्त हुई थीं–

(१) विश्व दृष्टि–महाराज अपने गाँव में बैठे यूरोप, अमेरिका और जर्मनी की बातें बताते थे । लोक–लोकांतर की अद्भुत बातें वे सुनते थे । पिछले महायुद्ध में जर्मनी की एक स्टीमर डूब रही थी, तब उसी समय वह समाचार उन्होंने लोगों को दिया था ।

(२) सर्वभाषा ज्ञान–वे गुजराती दूसरी कक्षा से ज्यादा पढ़े भी न थे, किन्तु गायत्री जप के प्रभाव से कितनी ही भाषाओं पर मातृभाषा जितना प्रभाव आ गया था । एक दिन उनके पास बड़ौदा के एक सरकारी कर्मचारी आये । वे तेलंगाना के निवासी थे, उनके साथ उन्होंने तेलगू भाषा में बात की । बाद में उसके साथ कन्नड़ में

एक फकीर के साथ फारसी में बातें करने लगे । कभी-कभी वे अंग्रेजी में बात करते हुए देखे गये । उनका कहना था कि–'येन ज्ञातेन इदं सर्व विज्ञातं भवति' गायत्री को जान लेने से और कुछ अज्ञात नहीं रहता ।

(३) अगाध शास्त्र ज्ञान से वे सम्पन्न थे ।

(४) ज्योतिष ज्ञान–वे कभी ज्योतिष पढ़े नहीं थे, लेकिन पास आने वाले मुँह देखकर भूत, वर्तमान, भविष्य की बातें बताते थे । जन्म कुण्डली भी बनाते थे और जमीन में गढ़ा हुआ द्रव्य भी दिखाते थे ।

(५) योगशास्त्र ज्ञान– शरीर और शरीर के अन्दर की शक्तियाँ स्वयं ने देखी हों, ऐसी वे बातें करते थे । उसी वक्त षट्चक्रों की कितनी ही महत्त्वपूर्ण बातें कहते थे ।

(६) वैदिक शास्त्र–आयुर्वेद सम्बन्धी कितनी ही चमत्कारी बातें बतलाते थे । वे कहते कि नक्षत्रों के साथ वनस्पतियों का घनिष्ठ सम्बन्ध है । अमुक नक्षत्र में अमुक औषधि–वनस्पति को अमुक विधि के साथ लिया जाय तो अमुक प्रकार के रोग वाले मनुष्य को निश्चित रोग से मुक्ति मिलेगी । इसी तरह अमुक–अमुक औषधियों से अमुक–अमुक रोग निश्चित रूप से ठीक हो जाता है ।

(७) मन्त्र शास्त्र सिद्धि–मन्त्रशास्त्र बहुत गहन विषय है । कौन सा मन्त्र कौन–सी प्रकृति के व्यक्ति को दिया जाये तो उसको तुरन्त सिद्धि मिले, यह बात मन्त्र की आत्मा और व्यक्ति की आत्मा को पहचानने वाली शक्ति से सम्बद्ध है, उनमें यह शक्ति थी ।

(८) वचन सिद्धि–वचन सिद्धि के कितने ही चमत्कार उन्होंने दिखाये थे । एक बार ब्राह्मण लोग खाने बैठे थे तभी बारिश शुरू हुई, महाराज ने वर्षा बन्द होने को कहा और वह बन्द हो गई । तुरन्त बुखार उतर जायेगा ऐसा कहने के साथ ही कितनों के ही बुखार उतर गये थे । कहने मात्र से कई लोगों को सन्तान

प्राप्त हुई । 'तुमको अब कभी दुःख भुगतना नहीं पड़ेगा ।' ऐसा जिसको भी कहा उसे फिर सुख ही मिला । महाराज जी ने जब–जब जो कुछ भी कहा वह अवश्य सिद्ध हुआ ।

(९) अन्य शरीर धारण–अपने शरीर को वैसा ही रखकर उन्होंने कितनी ही बार परकाया प्रवेश किया । एक बार उन्होंने एक मृत व्यक्ति के शरीर में प्रविष्ट होकर ऐसी गुप्त बातें बतायीं जिन्हें सुनकर सब लोग ही आश्चर्य में डूब गये ।

"धियो यो नः प्रचोदयात्" का सजीव करना या उसे जगाना है । अर्थात् इस मन्त्र-भाग का जप करते हुए मनुष्य उस साधारण बुद्धि को छोड़ कर मेधा, प्रज्ञा या ऋतम्भरा बुद्धि को प्राप्त करने की प्रार्थना करता है । लोक तथा परलोक को सिद्ध अर्थात् जीवन को सफल बनाने के लिए और पशुत्व से मनुष्यत्व और मनुष्यत्व से देवत्व प्राप्त करने के लिए यदि कोई अखण्डनीय नुस्खा है, तो यह उत्तम बुद्धिप्राप्ति का ही है और इसलिए गायत्री-मन्त्र में इसी बुद्धि की प्रार्थना की गई है ।

है। प्रसिद्ध गायत्रीमन्त्र में भी सवितादेव के उस तेज का ध्यान करने के लिए कहा गया है, जो हमारी बुद्धियों को सत्-मार्ग की ओर प्रवृत्त करता है।

''वरेण्य'' है, वरने योग्य है, सबके प्रेम करने योग्य है और सब तुझे अपना कहते हैं, मैं भी संसार में ऐसे काम करूँ, जिससे सब मुझसे प्रेम करें, मुझे वरें और मैं सबका अपना बन जाऊं । मैं किसी से द्वेष न करूँ । तू ''भर्गः'' है, तू पवित्रता, सत्य और प्रकाश का स्रोत है, मैं भी मन, वचन तथा कर्म से पवित्र व्यवहार करूँ, सत्य का आचरण करूँ तथा सम्पूर्ण कर्म ज्ञानपूर्वक करूँ, जिससे मेरे हृदय में किसी प्रकार का भय, शंका तथा लज्जा पैदा न हो । तू ''देव'' है, तेरी सम्पूर्ण रचना नियमपूर्वक है, तू कभी अपने नियमों से नहीं टलता, इसी कारण तू न्यायकारी है, मैं भी नियमपूर्वक अपने कर्तव्य का पालन करता हुआ न्यायाचारी बनूँ । तू आलस्य से रहित है सारे संसार को जीवन देता है, दिन-रात अपना कर्तव्य पालन करता है, मैं भी पुरुषार्थी बन कर अपने कर्तव्यों का पालन करूँ और देव-पदवी को प्राप्त होऊं । हे ओ३म्, हे सर्वशक्तिमान् सर्वेश्वर, हे प्रभु ! हे मेरे माता-पिता और गुरु ! मैं तेरा ही हूँ ।

इस प्रकार प्रार्थना तथा चिन्तन करने से जिज्ञासु में ज्ञानाग्नि प्रज्वलित होगी और प्रत्येक प्रकार का सुख तथा लाभ प्राप्त होगा । इसी उपाय से उपर्युक्त सभी शक्तियाँ जिज्ञासु के अन्दर विराजमान हो जायेंगी । यही 'धीमहि' शब्द का सजीव करना, यही उसका जप करना तथा यही उसका फल प्रभु की उपासना है ।

''भर्गो देवस्य धीमहि'' ८१

देना कि वह तपाने लगे, शीत को दूर करने लगे, प्रकाश देने लगे, अँधेरे को भगा दे, और हमारा भोजन पकाने का काम दे सके । केवल 'अग्नि' शब्द के ध्यान करने-मात्र से कोई अर्थ सिद्ध नहीं होता । इसी

प्रकार 'धीमहि' तभी सार्थक, सजीव अथवा जागृत किया जा सकता है, जब कि इस मन्त्र में वर्णित ईश्वर की स्तुति करने वाले उपर्युक्त शब्दों में ईश्वर के जो गुण वर्णन किये गये हैं, उन गुणों से जिज्ञासु यथाशक्ति काम लेने लग जाये, उन्हें व्यवहार में लाये, अर्थात् अपने जीवन में उन गुणों को धारण कर ले।

जिज्ञासु को इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिए—"भूः" तू प्राणों का प्राण है, मैं भी प्राणों को धारण करने वाला बनूँ, तू प्राणों का देने वाला है, मैं भी दूसरों को प्राण देने वाला बनूँ। मैं किसी के प्राणों का हरण न करूँ। तू "भुवः" है अर्थात् दुःखों से रहित है, मैं भी अपने जीवन को नियम-पूर्वक रखकर तथा तेरी आज्ञा में चलाकर स्वयं दुःखों से रहित बनूँ। तू दूसरों के दुःखों को हरता है, मैं भी दूसरों के दुःखों को हरूँ। तू "स्वः" है, सुख-आनन्द का स्रोत है, मैं भी उन गुणों को धारण करूँ, जिससे मेरा जीवन भी आनन्दमय बने। तू दूसरों को सुख देता है, उनका कल्याण करता है, मैं भी सबको सुख देने वाला तथा सबका कल्याण चाहने वाला बनूँ। तू "सविता" है, तू संसार को प्राणियों के कल्याणार्थ रचता है, मैं भी तेरे पदार्थों के आधार पर संसार में एक रचयिता बनूँ

॥ मंत्रपरिचय ॥

इस पुस्तिका में उल्लेखित मंत्रों का सामान्य नाम-परिचय निम्न में है।

प्रणव -- ॐ (अ,उ,म्)

व्याहृतित्रय -- भूः। भुवः। स्वः।

सप्तव्याहृति -- भूः। भुवः। स्वः। महः। जनः। तपः। सत्यम्।

गायत्री -- तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्यधीमहि। धियोयोनः प्रचोदयात्॥

गायत्री शिर -- ओमापोज्योतीरसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवःस्वरोम्।

गायत्री मंत्र - एक लघु परिचय १९

जो हमारे विचारों को ऊर्जा प्रदान करते हैं।

ॐ, वह जल, प्रकाश, सुगंध, अमृत और तीनों लोक हैं। प्रणव द्वारा

दान किया गया वह इन सभी का स्वरूप है।

स्पष्टीकरण:

तत् सवितुर् से शुरू होने वाली तीन पंक्तियाँ देव सविता,

आध्यात्मिक सूर्य को संबोधित हैं। सूर्य, सविता, वह भौतिक
सूर्य नहीं है जिसे हम आकाश में देखते हैं, बल्कि वह सर्वोच्च
आकाश में व्याप्त परम प्रकाश है, जो निम्न त्रिविध सृष्टि
से परे है। भौतिक सूर्य को वास्तव में सत्य-सूर्य का प्रतीक माना
जाता है, जो समस्त ज्ञान का केंद्र और विकिरणकारी शक्ति है। यह
उस परम स्रोत से निकलने वाला प्रकाश है जिसमें सृष्टि की समस्त
गति के मूल, अजन्मे की समस्त सृजनात्मक गति समाहित है। ऋषि कहते हैं,
यह प्रकाश हमारे विचार प्रवाह को प्रेरित और ऊर्जावान बनाए। वैदिक
काल में, मूर्ति पूजा का प्रचलन नहीं था। बाद के काल में सविता को
देवी के रूप में दर्शाया गया, कभी एक मुख के साथ, कभी पाँच मुखों के
साथ कमल पर बैठी या जल पर खड़ी, जो दिव्य ऊर्जाओं का मानक प्रतीक
है। उनके हाथों के एक जोड़े में चक्र है, जो जगत की सृष्टि
का प्रतीक है। दूसरे जोड़े में गदा और कुल्हाड़ी हैं, जो
राक्षसों से युद्ध करने वाली उनकी शक्तियों का प्रतीक हैं। एक
अन्य जोड़े में, वे मधु (शहद) का प्याला लिए हुए हैं, जो आनंद का
पेय है, और सृष्टि के रहस्य का प्रतीक है। एक और जोड़ा उनके
सभी भक्तों के प्रति उनके आशीर्वाद को दर्शाता है।
-- पृष्ठ संख्या 02- वेद मंत्र और सूक्त- पूजा में
व्यापक रूप से प्रयुक्त।
श्री अरबिंदो कपालिशास्त्री वैदिक संस्कृति संस्थान
बेंगलुरु।)
'सुवती-प्रेरयति कर्मणी लोकम्' सूर्य को 'सविता' कहा जाता है क्योंकि यह
अपने प्रकाश से संसार के सभी जीवों को उनके कार्यों में प्रेरित करता है।

'सवितुरियम ऋक्' गायत्री को 'सविता' भी कहा जाता है क्योंकि यह उस सविता से संबंधित मंत्र (ऋक्) है।

भगवान की लीला विचित्र है, अपनी ही शक्ति से वह स्वयं ही बंध जाता है । पारमार्थिक दृष्टि से वह स्वयं स्त्री है और स्वयं पुमान्, आत्म तत्त्व में लिंग भेद का भाव नहीं । वह स्वयं माया है और स्वयं मायावी, स्वयं नट है और स्वयं दर्शक, स्वयं ईश्वर है और स्वयं दास । कृष्ण राधा है और राधा कृष्ण, राम सीता है और सीता राम, शिव शक्ति है और शक्ति स्वयं शिव । इसी प्रकार आप ही रति है और आप ही काम ।

अध्यात्मिक रूप से "अग्नि चित तत्त्व है। सविता देवता (सूर्य भी) दिव्य चेतना है।" सविता देवता के गायत्री छन्द में मन्त्र में ज्ञान के प्रकाश और धारण करने योग्य मेधा एवं तेज देने की प्रार्थना की गई है। वेद के अनुसार हमारा सूर्य आकाश में वरुण राजा की परिक्रमा लगाता है।

अथर्ववेद के अठारहवें काण्ड के तीसरे सूक्त के मन्त्रों के अनुसार सूर्य से पृथिवी की उत्पत्ति हुई: "बाहुच्युता पृथिवी द्यामिवोपरि। (अथर्ववेद 18.3.25-35)।"

यजुर्वेद में कहा गया है कि सूर्य की ऊष्मा का रहस्य निरन्तर प्राण अपान का परिवर्तन है: "अन्तश्चरति रोचनाऽस्य प्राणादपानती। (यजुर्वेद 3.7)"

जो द्वेष करेगा वह दुःखी रहेगा। पाँचवां तेरा नाम (महानुदेव) महादेव है और निवासस्थान सूर्यमण्डल है। इस सूर्यवर्ती पुरुषकी गायत्री मंत्रसे उपासना करेगा वह सब

प्रकारसे सुखी रहेगा। जो द्वेषी गायत्री-संध्याको त्याग वेदविरुद्ध जप करेगा वह सर्वदा दुःखी रहेगा। तेरा छठा नाम रुद्र है

गायत्री रक्षा कवच— मानसिक सुख-शान्ति, शारीरिक रोगों से निवृत्ति, आर्थिक विषमताओं को दूर करने के लिए यह कवच धारण किया जाता हैं। भूत-प्रेत बाधा, चोर-डकैत, शत्रु-राजदण्ड, बुरे भविष्य की चिन्ता, हानि की आशंका, अकाल मृत्यु व रोगादि भय से यह कवच रक्षा करता है।

गायत्री का नाम गायत्री इसलिये पड़ा क्योंकि इसके गान से महान् भय से त्राण मिलता है। यह गायों, नदियों और प्राणियों का जीवन है। इसी से सभी की उत्पत्ति होती है। गायरूपी सरिता तथा प्राणीसम्भूत जल को यह शक्ति ले लेती है तथा नव माह तक अपने हाथों में रखती है और मेघ के रूप में प्रकट होकर वर्षा के रूप में मुक्त करती है। इस प्रकार सूर्यमयी शक्ति का वर्णन किया गया। अब अग्निमयी पराशक्ति का वर्णन सुनिये ॥ ३१-३२ ॥